ISSN-2321-3981

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

आषाढ़ २०८३ जुलाई २०२६

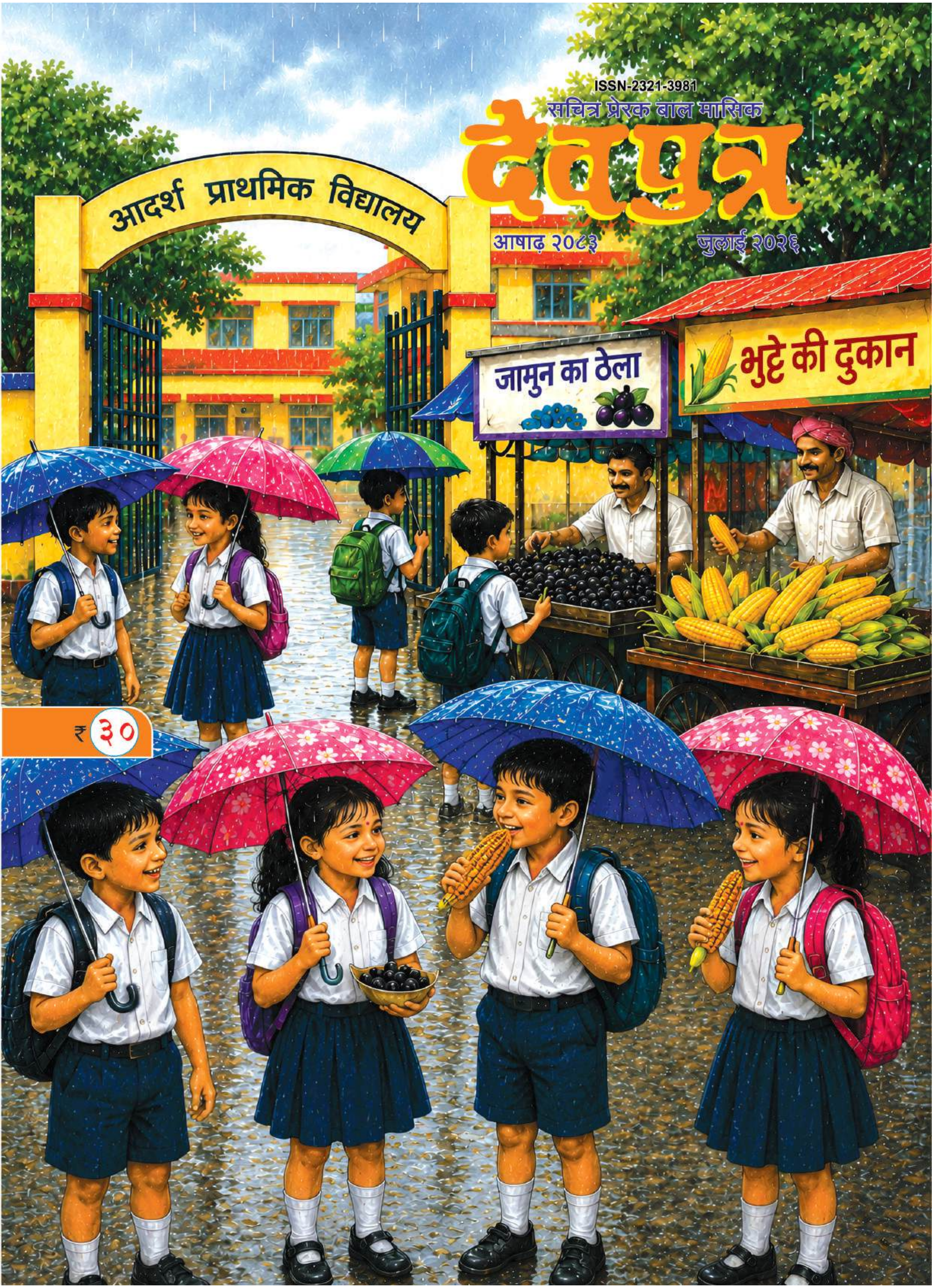

₹ ३०

कविता

कहलाते चंदा मामा क्यों ?

– दिलीप सिंह राठौर

चंदा मामा यह बतलाओ, रहते इतने दूर क्यों ?
सारे जग में बच्चों के, कहलाते प्यारे मामा क्यों ?
बहुत दूर क्यों रहते हमसे,
पास नहीं क्यों आते तुम ?
गोद उठा माँ तुम्हें दिखाती,
रोते चुप हो जाते हम।।
कौन शहर या गाँव तुम्हारा, हमें ठीक से पता बताओ।
अब की गर्मी की छुट्टी में, संग तुम्हारे खेल खिलाओ।।
रात को हम सो जाते मामा,
चुपके–चुपके से आते हो।
दिन भर घर में छिपे ही रहते,
क्या हमसे डर जाते हो ?

चंदा लोरी माँ जब गाती,
याद तुम्हारी आती है।
चंदा मामा मेरे भैया,
गाकर हमें सुलाती है।।

प्यारा–सा संसार तुम्हारा,
प्यारी–सी एक मूरत हम।
जगमगाते तारों के बीच,
रातों को मुस्काते तुम।।

– इन्दौर
(म. प्र.)

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

(विद्या भारती से सम्बद्ध)

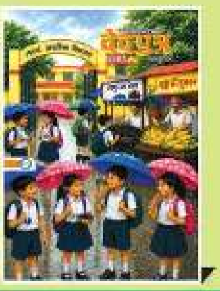

आषाढ़	२०८३	▪	वर्ष	४७
जुलाई	२०२६	▪	अंक	०१

संपादक

गोपाल माहेश्वरी

प्रबंध संपादक

नारायण चौहान

मूल्य

एक अंक	:	३० रुपये
वार्षिक	:	३०० रुपये
दस वर्षीय	:	५००० रुपये
सामूहिक वार्षिक	:	१८० रुपये

(कम से कम १० अंक लेने पर)

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल 'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

संपर्क

४०, संवाद नगर,
इन्दौर ४५२००१ (म. प्र.)
दूरध्वनि: (०७३१) २४००४३९

स्वामी सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर, म. प्र. के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक राकेश भावसार द्वारा अजीत प्रिन्टर्स एंड पब्लिशर्स, २०-२१, प्रेस कॉम्प्लेक्स, ए. बी. रोड, इन्दौर, म. प्र. से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, नवलखा, इन्दौर, म. प्र. से प्रकाशित।

e-mail:

व्यवस्था विभाग
devputraindore@gmail.com

संपादन विभाग
editordevputra@gmail.com

अपनी बात

प्यारे भैया-बहिनो!

आषाढ़-श्रावण के रिमझिम फुहारों वाले महिनों के आगमन के साथ ही 'पावस-उत्सव' यानी वर्षा के त्योहार भी आरंभ हो चुके हैं। हमारे पर्व त्योंहारों ने हमें प्रकृति का आनंद मनाना सिखाया है। साथ ही जीवन के संदेश भी लिए है। इन त्योहारों की चर्चा अपनी बात में होती रही है। आज मैं आपको एक दृश्य पर केन्द्रित करना चाहता हूँ जिससे मुझे तो बड़ी प्रेरणा मिली, संभवत: आपको भी मिल सके।

आजकल काले-कजरारे बादलों से कभी भी टपाटप असंख्य छोटी-छोटी पानी की बूँदें टपकने लगती हैं। एक बूँद का अस्तित्व, व्यक्तित्व, महत्व कितना छोटा होता है न? उनकी सार्थकता तब ही प्रकट होती है जब वे आपस में मिलकर कोई धारा का रूप लेती हैं। धाराएँ मिलकर क्रमश: बड़ी होती जाती हैं। आप कागज की नाव तैरा सकें इतनी बड़ी और लोहे के बड़े-बड़े जहाज तैर सकें इतनी बड़ी भी। कुछ धाराएँ, झरनों, तालाबों और कुओं में पहुँचती है। कुछ खेतों के आँचल में, धरती की गोद में चली जाती हैं और **'धरती का धन'** बन जाती है। वर्षभर धरती का जल खर्च इसी से चलता है जैसे आपका जेब खर्च आपकी गुल्लक से। छोटी-छोटी बचत बड़ी समस्या का हल।

मुझे लगता है हम मनुष्यों का भी इन बूँदों जैसे ही अलग-अलग होता है लेकिन हमारे जीवन का आनंद, उसकी सार्थकता व्यक्ति के परिवार, परिवार से कुटुम्ब, कुटुम्ब से समाज और समाज से राष्ट्र बनने तक मिलते रहने, संगठित होते जाने से ही बनती है।

वर्षा की समस्त बूँदों में एक ही जल तत्व है जैसे हम सब प्राणियों में एक ही परमात्मा। बूँदों की तरह मिलकर हम उस परमात्मा के अंशों का जितना संगठन करते हैं उतने शक्तिमान होते हैं इसीलिए कहा गया है। संगठन में शक्ति है और समाज का कार्य ईश्वरीय कार्य है।

बूँद बूँद से घट भरे, बूँद से जाए रीत।
बूँद बूँद उपयोगिनी, रहे परस्पर प्रीत।।

आपका

बड़ा भैया

web site - www.devputra.com

।। अनुक्रमणिका ।।

कहानी

- हाथों का जादू -ताराचंद मसकाने १४
- अमला विमला की दादी -नीलम राकेश ३९

छोटी कहानी

- अँगूर मीठे हैं -हरिन्दरसिंह गोगना ०५
- इन्द्र का परामर्श -भूपसिंह भारती ३३
- मोर की नासमझी -सीताराम गुप्त ३६
- छतरी का कमाल -संदीप पांडे 'शिष्य' ४४

एकांकी

- दीवार के दूसरी ओर..... -कुसुम अग्रवाल ०८

लघु आलेख

- भीगना बरसात में..... -मोनिका जैन ३१

बाल लेखनी

- चाँद धरती और सूरज -आयुष्मान सिंह १७

प्रसंग

- परीक्षा -डॉ. हनुमान प्रसाद 'उत्तम' २३
- क्रांतिकारी नौजवान.....-डॉ. ऋषिमोहन श्रीवास्तव ४२

चित्रकथा

- लाल बुझक्कड़ काका..... -देवांशु वत्स १३
- दोस्तों का दोस्त -देवांशु वत्स ४३

कविता

- कहलाते चंदा मामा.... -दिलीप सिंह राठौर ०२
- चलो ज्ञान के दीप.... -त्रिलोक सिंह ठकुरैला १२
- बंदर भैया -विज्ञान व्रत २७
- प्यारे मिट्ठू -डॉ. नंदिनी शर्मा 'नित्या' ५०
- ध्रुव -अश्वनी कुमार पाठक ५१

स्तंभ

- बाल साहित्य की धरोहर -डॉ. नागेश पांडेय 'संजय' १८
- बच्चे विशेष -रजनीकांत शुक्ल २८
- शिशु महाभारत -मोहनलाल जोशी ३०
- छः अँगुल मुस्कान - ३२
- पुस्तक परिचय - ४६

बौद्धिक क्रीडा

- अकड़म बकड़म -चाँद मोहम्मद घोसी ०६
- भूल भुलैया -चाँद मोहम्मद घोसी १७
- पहेलियाँ -सुनील कुमार माथुर ३७
- जानवरों के मजेदार तथ्य -देवांशु वत्स ३८
- मस्तिष्क का व्यायाम -देवांशु वत्स ५०

यात्रा वृत्त

- इसरो दर्शन:एक शैक्षणिक भ्रमण - २४

साथ में
संकेत गोस्वामी की ढेरों
मनोरंजक सामग्री

क्यू आर कोड से भी
जमा कर सकते हैं आप
देवपुत्र का सदस्यता शुल्क

क्यू आर कोड से शुल्क जमा करने पर स्क्रीन शॉट, अपना नाम, पूरा पता, पिनकोड सहित एवं मोबाइल नम्बर, प्रबंध संपादक श्री. नारायण चौहान के व्हाट्सएप नंबर 8103700552 पर अवश्य प्रेषित करें।

क्या आप देवपुत्र का शुल्क नेट बैंकिंग से जमा करा रहे हैं? तो कृपया ध्यान दें!

देवपुत्र का शुल्क इसकी प्रकाशन संस्था - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** के खाते में ही जमा कराएँ।
विवरण इस प्रकार है- खातेदार - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास बैंक - स्टैट बैंक ऑफ इण्डिया, एम.वाय.एच.परिसर शाखा, इन्दौर** खाता क्रमांक-**38979903189** चालू खाता **(Current Account) IFSC- SBIN0030359** राशि जमा करने के बाद जमा पर्ची को देवपुत्र के ई-मेल **ID devputraindore@gmail.com** पर अवश्य भेजिए। नेट बैंकिंग में प्रेषक के कॉलम में पहले अपना स्थान लिखें फिर **सरस्वती शिशु मंदिर** का संक्षेप लिखें तो सन्देश ठीक आता है। उदाहरण के लिए -सरस्वती शिशु मंदिर, संजीत मार्ग, मंदसौर ने देवपुत्र का शुल्क भेजा तो उन्हें प्रेषक में लिखना चाहिए - **''मन्दसौर संजीत मार्ग SSM''** आशा है सहयोग प्रदान करेंगे।

अँगूर मीठे हैं

– हरिन्दर सिंह गोगना

अँगूरों तक हाथ न पहुँचने से निराश हुई लोमड़ी उन्हें खट्टे कहकर लौटने लगी तो उसे याद आया कि उसने तो अपने बेटे को वचन दिया था कि यदि वह परीक्षा में पास होगा तो उसे ढेर सारे अँगूर खिलाएगी। उसके बेटे ने तो आज सुबह ही उसे यह खुशखबरी सुना भी दी थी किन्तु अब लोमड़ी बेटे से किया वचन स्मरण कर मन ही मन उदास थी कि उसका बेटा जब उसे खाली हाथ लौटे देखेगा तो क्या सोचेगा कि माँ उसे अँगूर भी न खिला सकी।

वह इसी उधेड़बुन में घर की ओर अनचाहे मन से लौट रही थी कि तभी उसे आशा की एक किरण दिखाई दी जिससे वह अँगूर तोड़ सकती थी। उसे कुछ याद आया और वह बुदबुदाई, ''अरे! यह तो मैंने सोचा ही न था। मेरा काम बन गया।''

और फिर वह तेज कदमों से पास ही के जंगल में अपने मित्र के पास गई। उसे अपने मित्र को अधिक ढूँढ़ने की आवश्यकता भी न पड़ी। क्योंकि वह तो दूर से ही दिखाई दे रहा था। यह था लंबू जिराफ जो

लोमड़ी का मित्र था। कभी लोमड़ी ने जिराफ की सहायता की थी। तब से दोनों मित्र बन गए थे। जिराफ ने लोमड़ी को उसकी ओर आते देखा तो पास आकर मुस्कुरा कर बोला– ''आज मित्र का स्मरण कैसे हो आया?''

फिर लोमड़ी ने पूरी बात बताई तो जिराफ थोड़ा हँस कर बोला– ''अरे बस इतनी–सी बात?''

और फिर वह लोमड़ी के साथ उसी बगीचे में आया और अपने ऊँचे कद और लंबी गर्दन की सहायता उसने ढेर सारे अँगूरों के गुच्छे तोड़ कर लोमड़ी को दिए। लोमड़ी अँगूरों के गुच्छे संभालते हुए बोली– ''वाह मित्र! आज तुमने अपनी मित्रता का कर्त्तव्य पूरा कर दिया और मैं अपने बेटे को दिया वचन निभा सकी। मैं तुम्हारा उपकार नहीं भुलूँगी।''

''मित्रों में उपकार कैसा? फिर कभी मेरी सहायता की आवश्यकता हो तो अवश्य पुकार लेना।'' जिराफ ने कहा और वहाँ से चला गया।

घर आकर लोमड़ी ने सबसे पहले अँगूरों को अच्छी तरह धोकर साफ किया फिर दोनों माँ–बेटे ने खूब अँगूर खाए। लोमड़ी का बेटा बोला– ''माँ! यह अँगूर तो बहुत मीठे हैं।''

''तो मैंने कब कहा कि अँगूर खट्टे हैं?'' लोमड़ी हँस कर बोली।

– पटियाला (पंजाब)

बौद्धिक क्रीडा

अकड़म–बकड़म

– चाँद मोहम्मद घोसी

१) राज केसरी बांके लाल फ्री स्टाइल कुश्ती में दस पहलवानों से अकेला मुकाबला करता है।

२) वस्त्र उद्योग की फैक्ट्रियों के कारण बबुआ महानगरों में माल निर्यात करता है।

३) शिकार की ताक में खड़ा वनराज शेर तालाब का पानी चुपचाप पीता है।

४) स्वयंवर में राम ने सीता से वरमाला पहनी थी।

५) सर्दी के मौसम में बाजरे को चाची कूट–कूटकर स्वादिष्ट खिचड़ी बनाती है।

६) प्रसिद्ध संत रामदास के भजनों से मोहित होकर भक्तगण नाचने लगते हैं।

७) बम विस्फोट की आवाज में मालन चमेली चीखकर बेहोश हो गई।

८) छुट्टी के बाद नन्हे बच्चे रीछ का तमाशा बड़े शौक से देखते हैं।

९) क्षय रोग से पीडित भोला अमरू दवाई आँखें मूँद कर एक ही सांस में पी लेता है।

१०) मीना रंगीन वस्त्रों पर कढ़ाई का कार्य करके उनमें चार चाँद लगा देती है।

– मेड़ता सिटी (राजस्थान)

उत्तर देखो दर्पण में

उत्तर– १) केला। २) आम। ३) पपीता। ४) सेव। ५) चीकू। ६) संतरा। ७) लीची। ८) चेरी। ९) अमरूद। १०) नारंगी।

सच है या झूठ ?

प्रस्तुति- [signature]

स्पिटिंग कोबरा इतना जहरीला सांप है कि उसके मरने के बाद भी उसे कोई इंसान उठा ले तो उस इंसान के शरीर में विष फैल सकता है. सच है या झूठ ?

सच है.

हमारी आंखें टेबल-टेनिस की गेंद के बराबर होती हैं, लेकिन हमें मूल रूप से इसका बहुत छोटा हिस्सा ही सामने दिख पाता हैं. सच है या झूठ ?

एकदम सच है.

हाथी बहुत कम पानी पीता है और अपनी सूंड में एक लीटर से ज्यादा पानी भरकर रखने से उसे तकलीफ हो सकती है. सच है या झूठ ?

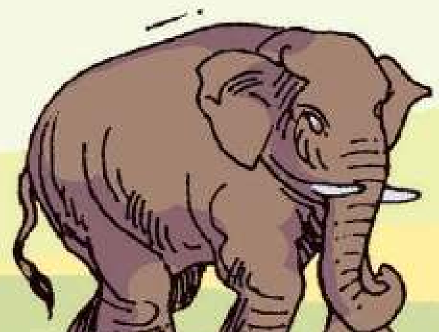

झूठ. हाथी एक दिन में करीब 225 लीटर पानी पीता है और बिना तकलीफ अपनी सूंड में 9 लीटर से ज्यादा पानी भरकर रख सकता है.

रक्त में लाल और सफेद दो प्रकार की रक्त कणिकाएं होती है और जिस पदार्थमें वे तैरती रहती हैं उसे प्लाज्मा कहते हैं. सच या झूठ ?

सच है.

दीवार के दूसरी ओर की दुनिया

– कुसुम अग्रवाल

यह एकांकी आधुनिक युग में सोशल मीडिया और डिजिटल उपकरणों के बढ़ते प्रभाव पर आधारित है। कहानी एक परिवार और उनके आसपास के समाज पर केंद्रित है, जो डिजिटल दुनिया में इतना खो गया है कि आपसी संवाद और भावनात्मक जुड़ाव लगभग समाप्त हो गया है।

प्रमुख पात्र

१) आरव– एक किशोर, जो सोशल मीडिया पर दिन–रात व्यस्त रहता है।

२) नैना– उसकी छोटी बहन, जो इंस्टाग्राम का खूब प्रयोग करती है।

३) माया– माँ, जो स्वयं ऑनलाइन शॉपिंग और वर्क फ्रॉम होम में व्यस्त रहती है।

४) राजेश– पिता! जिन्हें हमेशा काम की ईमेल और फोन कॉल में उलझा हुआ दिखाया गया है।

५) दादी– परिवार की सबसे वरिष्ठ सदस्य, जो तकनीक से दूर हैं और परिवार को साथ लाने का प्रयास करती हैं।

दृश्य–१

(मंच पर एक आधुनिक ड्राईंग रूम का सेट। माया (माँ) लैपटॉप पर, राजेश (पिता) फोन पर, आरव (बेटा) गेम खेल रहा है, और नैना (बेटी) इंस्टाग्राम पर व्यस्त है। दादी अखबार लिए बैठी हैं। सभी अपने–अपने डिवाइस में व्यस्त हैं।)

दादी (चारों ओर देखते हुए)– ये कैसी दिनचर्या है? ये कैसा जीवन है? अपने बीच में कैसी दीवारें खड़ी कर ली हैं तुम सबने? एक छत के नीचे होकर भी सब कितने दूर हैं। मैं देख रहीं हूँ तुम सब कब से यहाँ बैठे हो, लेकिन किसी के मुँह से एक शब्द नहीं निकला। मैं जब से तुम्हारे पास रहने आयी हूँ, सुबह शाम तुम सबकी यही हालत है। मुझे समझ में नहीं आ रहा कि तुम सब ऐसे कैसे रह लेते हो? मुझे तो ये सब बड़ा अजीब सा लग रहा है?''

माया (लैपटॉप से सिर उठाए बिना)– ''माँ! इसे दीवार नहीं कहते, ये हमारी आज की आवश्यकताएँ हैं। आब बेकार परेशान हो रही हैं। ये डिजिटल जमाना है। काम, मनोरंजन, सब इन्हीं से होता है। देखो ना अभी बैठे–बैठे मैंने आपके लिए गर्म शॉल और वाकिंग–स्टिक ऑर्डर कर दी है। आपने कहा था ना मुझे इनकी आवश्यकता है? अब देखना, घर बैठे ही दोनों चीजें आ जाएँगी, वह भी अच्छी क्वालिटी की और वाजिब दामों में। फिर भी यदि पसंद न आएँ तो वापस कर दो। इतनी सुविधा पाने के लिए लैपटॉप पर कुछ समय तो बैठना ही पड़ता है।''

राजेश (फोन पर बिजनेस कॉल समाप्त करते हुए)– ''सही कह रही हैं माया। आज के दौर में बिना टेक्नोलॉजी के तो जिंदगी ठहर जाएगी। माँ तुमने सुना ही होगा कि मैंने अभी–अभी घर बैठे फोन पर कितनी बड़ी डील कर ली है। उसके लिए बातचीत को कुछ समय देना ही पड़ता है। मजे की बात तो है कि अभी वॉट्सऐप पर सारी डिटेल आ जाएगी और ऑनलाइन पेमेंट भी हो जाएगा। यह बिलकुल सुरक्षित है। माँ यह तकनीक का जमाना है।''

दादी (आरव के पास जाकर)– ''अब तुम भी कह दो अपनी? तुम इस मोबाइल पर कौन सी बिजनेस डील कर रहे हो या शॉपिंग कर रहे हो? मेरे विचार से तो तुम मोबाइल में गेम खेलकर अपना स्वास्थ्य और अपना समय बर्बाद कर रहे हो?''

आरव (जोर से)– ''दादी! आपको कुछ नहीं पता। यह गेमिंग है? यह केवल टाइम पास नहीं है, लाखों लोग खेलते हैं इसे। है ना पिताजी? यह एक करियर भी हो सकता है? पूरी दुनिया में प्रोफेशनल

गेमर्स करोड़ों कमा रहे हैं। न जाने कितने मित्र मेरे साथ जुड़े हुए हैं। जब मैं इसमें गेम जीता हूँ तो मुझे बहुत आनंद आता है।''

दादी– ''क्या उसमें से एक भी तुम्हारा सच्चा मित्र है ? क्या तुम्हें पता है कि तुम इसमें गेम जीतकर अपनी जिंदगी का असली आनंद हार रहे हो ?''

(इसके बाद दादी नैना के पास जाती है मोबाइल पर सेल्फी लेने में व्यस्त है।)

दादी– ''अब तू भी बता दे। इस तरह मुँह बना बनाकर फोटो लेने से तेरी कौन–सी कमाई हो रही है ?''

नैना (मुस्कुराते हुए)– ''मुझसे पूछो ही मत दादी ! सोशल मीडिया ने तो सब कुछ बदल दिया है। इन फोटोज के कारण से ही तो मेरे पास सैकड़ों फॉओअर्स हैं। मेरी एक पहचान है।''

दादी (आश्चर्य चकित होकर)– ''पहचान ? इंसान की पहचान रिश्तों से होती है, सोशल मीडिया से नहीं।''

माया (थोड़ा तंज करते हुए)– ''माँ! आपके समय में ये सब नहीं था। इसलिए आपको ये सब व्यर्थ लगता है।''

दादी (गंभीर स्वर में)– ''व्यर्थ नहीं लगता है, पर मुझे यह लगता है कि यह सब जीवन के वास्तविक सुख छीन रहा है। तुम लोग अपने साथ–साथ अपने बच्चों को भी यही सिखा रहे हो कि संबंधों की जगह सारा समय स्क्रीन को दे दें।''

राजेश (मुस्कुराते हुए)– ''माँ, हम वक्त के साथ चल रहे हैं। आपको भी प्रयास करना चाहिए।''

नैना– ''चलो दादी ! आपके साथ एक सेल्फी लेती हूँ।''

(दादी मुँह बिचकाकर वहाँ से जाने को होती है कि आरव बोलता है।)

आरव– ''आओ दादी! मेरे साथ यह गेम खेलो। एक बाइक आप चलाना एक मैं चलाऊँगा।

देखते हैं कौन जीतता है?''

दादी उसको हल्का-सा धक्का देकर उससे दूर हट जाती है और जोर-जोर से बोलती है, ''दीवारें, दीवारें। चारों ओर हैं दीवारें। ये तकनीक की दीवारें? ये व्यस्तता की दीवारें। रिश्तों को तोड़ती दीवारें। सबसे मुख मोड़ती दीवारें। कैसे गिरेंगीं ये दीवारें?''

(एक ओर बैठकर एक किताब पढ़ने में व्यस्त हो जाती है।)

दृश्य २

(अचानक मंच पर लाइट्स झपकती हैं और अंधेरा छा जाता है। साउंड इफेक्ट: बिजली कटने की आवाज। सभी परेशान हो जाते हैं।)

आरव (हड़बड़ाकर)- ये क्या हुआ? बिजली चली गयी और बिजली के साथ-साथ इंटरनेट कनेक्शन में चला गया। शिट्! मेरा गेम बंद हो गया।''

नैना (घबराकर)- ओहो मेरा इंस्टा अपडेट? अब क्या करूँगी मैं?

राजेश (झुंझलाते हुए)- इस बिजली वाले भी न! मेरा तो प्रेजेंटेशन ही अटक गया।

माया- अरे! खाना भी बनाना था। माइक्रोवेव कैसे चलेगा आज तो मुझे बेक्ड डिश बनानी थीं।

दादी (चारों ओर घूमकर दार्शनिक अंदाज में)- अब जब ये दीवारें गिर गई हैं, तो आओ, दीवार के दूसरी ओर की दुनिया की बातें करें।''

(दादी मोमबत्ती जलाकर सबको अपने पास बुलाती हैं।)

नैना- ''मगर हम क्या बातें करेंगे।''

दादी- ''अपने बचपन के दिनों की बातें करूँगी। जब न इंटरनेट था, न ये मोबाइल फोन, और न ये टेक्नोलॉजी का झंझट। फिर भी हम कितने खुश रहते थे।''

माया (थोड़ा रुचि लेते हुए)- ''माँ! बिना इंटरनेट और तकनीक के आप लोग क्या करते थे?''

दादी (मुस्कुराते हुए)- ''हमारे पास यह स्क्रीन वाली दीवारें नहीं थीं, पर हमारे बीच ऐसी दीवार भी नहीं थी जो हमें अलग करती। (फिर याद करते हुए) गर्मी के दिनों में शाम होते ही घर के आँगन में सब लोग एकत्र होते थे। वहीं चारपाई बिछा लेते थे। ताश खेलते थे, गीत गाते थे, चुटकुले सुनाते थे। सर्दियों के दिनों में धूप के पीछे-पीछे भागते थे। जहाँ-जहाँ धूप, वहाँ-वहाँ हमारी बैठक। एक ओर हम बच्चे पढ़ने लिखने बैठ जाते थे दूसरी ओर माँ स्वेटर बुनती रहती थी। बुनते-बुनते बीच में हमें बुलाकर हमारा नाम ले लेती थी। वहीं पास में दादी हमारी ओर पीठ करके मटर छीलने बैठ जाती थी।''

नैना (आश्चर्य से)- ''पीठ करके क्यों?''

दादी (हँसते हुए)- ''मटर के दानों के बचाव के लिए? हमारी ओर मुँह करके बैठने से हम सारे मटर जो खा जाते थे।''

(यह सुनकर नैना और आरव भी हँसने लग जाते हैं।)

दादी- ''हम बारिश में भीगते थे, कागज की नाव बनाकर चलाते थे। कभी-कभी खेतों पर जाते थे। कभी खाना लेखर, कभी छाछ- राबड़ी लेकर। हम अपने खेत के साथ-साथ आस-पास के खेतों में उगने वाले फल आदि तोड़कर भी बड़े आनंद से खाते थे। हमें कोई नहीं मना करता था। उस समय संबंधों में अपनापन था।''

राजेश (संदेह के साथ)- ''लेकिन माँ! समझ नहीं आता कि तकनीक के बिना इतना सब कुछ आसान कैसे था?''

दादी (गंभीरता से)- ''आसान नहीं या, पर सुकून था। समय भले ही कठिन था, पर रिश्ते गहरे थे। कोई फोन नहीं था, फिर भी हर समाचार समय पर मिल जाता था।''

आरव (थोड़ा सोचकर)– ''दादी! क्या सच में आपको वीडियो गेम नहीं खेलना आता था?

दादी (हँसते हुए)– तुम्हारे जैसे ये झूठी–मूठी की रेस लगानी नहीं आती थी। हमारे खेल अलग थे। कबड्डी, पिट्टू, गिल्ली–डंडा। वह खेल जो शरीर को भी ताकत देते थे और मन को भी प्रसन्न रखते थे।

नैना (थोड़ा नरम पड़ते हुए)– दादी, सच में वह समय कितना अलग होगा। (कहकर उस समय की कल्पना करती है।)

दृश्य ३

(बिजली वापस आ जाती है। सभी के पास फिर से डिवाइस चलाने का अवसर होता है, लेकिन इस बार वातावरण बदला हुआ है।)

माया (फोन उठाते हुए)– ''चलो! अब वापस काम पर।''

राजेश (लैपटॉप खोलते हुए)– ''हाँ! और मेरा प्रेजेंटेशन।''

दादी– (थोड़ा उदासी से)– ''फिर वही दीवारें... .दीवारें...दीवारें.... सब कुछ फिर से छीन लेंगी दीवारें।''

(सभी दादी की ओर देखते हैं और रुक जाते हैं। एक–एक करके सभी अपने डिवाइस बंद कर देते हैं।)

आरव (दादी के पास आकर)– ''दादी! आप हमें गिल्ली–डंडा सिखाएँगी?''

नैना– ''और मैं आज रात दादी से कहानियाँ सुनूँगी। फिर मेरी सहेलियों को सुनाऊँगी। उन्हें बड़ा आनंद आएगा।''

राजेश (मुस्कुराते हुए)– ''और मैं माँ के साथ शतरंज खेलूँगा।''

माया (हँसते हुए)– ''और मैं माँ के पुराने गीत सुनूँगी। विवाह के गीत, लोरी प्रभाती, भजन आदि

सीखूँगी ताकि आयोजनों में गा कर वाहवाही बटोर सकूँ। यूट्यूब की बजाए माँ से तरह-तरह के व्यंजन मिठाइयाँ बनानी सीखूँगी ताकि हम सब सदा पारंपरिक स्वाद का आनंद ले सकें।''

दादी (प्रसन्न होकर)- ''यही है दीवार के दूसरी ओर की दुनिया। यही असली जिंदगी है। तकनीक हमारी सहायता के लिए है, किन्तु संबंध हमारी आत्मा हैं। इन्हें समझना और सहेजना सीखो। तकनीक हमारी मदद के लिए है, लेकिन रिश्ते हमारी जिंदगी हैं जो कि एक-दूसरे के साथ समय बिताने से ही परिपक्व होते हैं। इसलिए तकनीक का गुलाम न बनकर उसे अपना सेवक बनाओ।''

अंतिम दृश्य

(दादी मंच के बीच में आती हैं। बैकग्राउंड में धीमा संगीत।) दादी-

''रिश्तों की गरमाहट से सजी रहे ये जिंदगी,
तकनीक से कहो तुम बस कहो हमारी बंदगी।
आधुनिकता में भी अपनों से जुड़ा रहे जीवन
तकनीक के पीछे भागकर छूटे ना अपनापन।
दीवार के दूसरी ओर है प्यार और विश्वास
बसते हैं रिश्ते नाते और सुकून की मिठास।

(लाइट्स धीमी होती हैं। बैकग्राउंड में पूरा परिवार अन्त्याक्षरी खेलता और हँसता हुआ दिखता है। नाटक का अंत।) **- कांकरोली, (राज.)**

कविता

चलो, ज्ञान के दीप जलाएँ

- त्रिलोक सिंह ठकुरेला

आओ, हम स्कूल चलें सब,
मिलकर वहाँ पढ़ेंगे।
हम विद्या की ज्ञान प्रभा में
मिलकर साथ बढ़ेंगे।।

निखर उठेगा जीवन-पथ,
जब शिक्षा, बोध, कला हो।
विद्या ही वह पारस, जिससे,
विविध प्रकार भला हो।।

विद्या विनय, विवेक जगाकर,
साहस से भर देगी।
हमें अकिंचन से उन्नत कर,
सारे दु:ख हर लेगी।।

जो भी पढ़ा, बढ़ा वह आगे,
सब ही यह समझाएँ।
चलो, ज्ञान के दीप जलाएँ,
हम भी पढ़ने जाएँ।।

- हाथरस
(उत्तर प्रदेश)

लाल बुझक्कड़ काका के कारनामे

-देवांशु वत्स

हाथों का जादू

– ताराचंद मकसाने

सुमित और अमित अच्छे मित्र थे, दोनों एक ही कक्षा में पढ़ते थे। सुमित अमीर तो अमित गरीब था। सुमित एक बड़े टॉवर में रहता था और अमित का घर एक चॉल में था। सुमित के पिता एक बैंक में अधिकारी थे तो उसकी माँ एक प्राइवेट कंपनी में नौकरी करती थी। अमित के पिता एक कुरियर कंपनी में मामूली नौकरी करते थे और उसकी माँ गृहिणी थी। सुमित के टिफिन में बर्गर, पिज्जा, पास्ता, नूडल्स, फ्रेंचफ्राईज, पेनकेक आदि तो अमित के टिफिन में पोहे, परांठे, सब्जी–रोटी आदि होते थे।

सुमित की माँ के पास इतना समय नहीं होता था कि वह सुबह अपने लाड़ले को टिफिन बनाकर दें। सुमित का टिफिन कभी नौकरानी बनाती थी तो कभी उसके टिफिन के लिए डोमीनोज, मेकडोनाल्ड जैसे होटलों से चीजें मँगायी जाती थीं। अमित की माँ सुबह जल्दी उठकर अपने हाथों से पहले अपने लाड़ले के उसकी मनपसंद की चीजें कभी पोहे तो कभी आलू–गोभी के परांठे, कभी इडली–डोसा तो कभी सब्जी–रोटी बनाती थी, अमित के शाला चले जाने के बाद वह अपने पति के लिए भी टिफिन बनाती थी।

दोपहर की छुट्टी में दोनों मित्र साथ में बैठकर अपने–अपने टिफिन खाते थे। सुमित को कईं बार अपने टिफिन की चींजें पसंद नहीं आती थी पर जोर से भूख लगने पर जो भी टिफिन में होता था उसे निगल जाता था। अमित अपने टिफिन की चीजें बड़े चाव से खाता था, ये चीजें इतनी स्वादिष्ट होती थीं कि वह कई बार अँगुलियाँ चाटने लगता था। अमित को अपना टिफिन इतने चाव से खाते हुए देखकर सुमित को बड़ा आश्चर्य होता था।

एक दिन सुमित ने अमित से पूछा– ''अमित, आज हम आपस में टिफिन बदली करें क्या?''

अमित ने कहा– ''हाँ, क्यों नहीं...।''

उस दिन सुमित के टिफिन में 'पिज्जा' का एक 'पीस' था, अमित ने एक कौर ही खाया और मुँह बिगाड़ने लगा, दूसरा कौर खाने का साहस न कर पाया, उसने टिफिन बंद कर दिया। अमित के टिफिन में आलू के दो परांठे थे और नींबू का अचार भी था, सुमित ने एक कौर खाया, उसे यह बहुत ही स्वादिष्ट लगा, पलभर में उसने दोनों परांठे गटक लिया।

तृप्त होते हुए सुमित बोला– ''वाह! वेरी टेस्टी मजा आ गया। तुम्हारी माँ इतने स्वादिष्ट परांठे कौन–सी होटल से मँगाती हैं?''

अमित ठहाका लगाकर मुस्कुराते हुए बोला– ''अरे सुमित, ये किसी होटल से मँगाए हुए परांठे नहीं है बल्कि मेरी माँ ने अपने हाथों से बनाएँ हैं। हम तो बहुत गरीब है, हमारे घर में होटल से कभी कुछ नहीं आता है। मेरी माँ ही मेरा और मेरे पिताजी का टिफिन बनाती है। वह सुबह हमारे लिए गरमा–गरम नाश्ता भी बनाती है। माँ के हाथ की बनी हर चीज बहुत स्वादिष्ट होती है।'' सुमित ने अँगुलियाँ चाटते हुए अपना सिर हिलाकर सहमति दर्शायी।

अमित को भी भूख लगी थी पर उसने चेहरे पर कोई भाव आने नहीं दिए न ही वह कुछ बोला। सुमित ने उसका पूरा टिफिन खा लिया था। अमित को यह देखकर अच्छा लग रहा था कि सुमित उसकी माँ के हाथों से बने आलू के परांठे खाकर तृप्त हो गया है।

संध्या को घर जाते ही अमित ने अपनी माँ को बताया– ''माँ! आज मेरा पूरा टिफिन मेरे मित्र सुमित ने खा लिया। वह कह रहा था कि तुमने आलू के परांठे बहुत स्वादिष्ट बनाए हैं।''

माँ ने कहा– ''कोई बात नहीं बेटा! कभी–कभी किसी खिलाने में भी आनंद मिलता है। कल से मैं तुम्हारे टिफिन में एक परांठा अधिक रख दिया करूँगी।''

''माँ! कल की बात कल करेंगे, अभी मुझे कुछ खाने को दो, बहुत जोर से भूख लगी है।'' कहते हुए वह माँ से लिपट गया।

अपने लाड़ले का माथा चूमते हुए उसने कहा– ''मेरे राजा बेटे के लिए नाश्ता तैयार है, बस तुम हाथ मुँह धोकर आ जाओ।''

उधर सुमित ने घर पहुँचते ही अपना टिफिन एक ओर फेंक दिया। सुमित की माँ ने उसकी यह हरकत देखकर किंचित आवेश में कहा– ''क्या हो गया सुमित! अपना टिफिन क्यों फेंक दिया ?''

''माँ! मुझे नहीं खाना है तुम्हारा टिफिन मुझे होटल की ये रूखी–सूखी और बिना स्वाद वाली चीजें बिल्कुल अच्छी नहीं लगती है। मेरा मित्र अमित अपने टिफिन में हमेशा अपनी माँ के हाथ की बनी चीजें लेकर आता है, आज मैंने उसका टिफिन खाया था, अमित की माँ ने आलू के परांठे बनाए थे, मैंने दोनों परांठे खा लिए, उसकी माँ बहुत ही स्वादिष्ट चीजें बनाती है, मैं तो अँगुलियाँ चाटते रह गया। अमित ने मेरा टिफिन नहीं खाया, पिज्जा का एक निवाला भी उसके गले नहीं उतरा। अमित कहता है कि माँ के हाथ की बनी हर चीज बहुत स्वादिष्ट होती है।'' कहते हुए सुमित की आँखों से आँसू टपक पड़े।

अपने लाड़ले की आँखों में आँसू देखकर माँ का दिल पसीज गया, अपने सुमित को खींचकर अपनी छाती से लगा लिया। सुमित की माँ को बहुत बुरा लग रहा था कि वह अपने बेटे के लिए समय नहीं

निकाल पाती है, नौकरी करने वाली महिलाओं के साथ यह मुश्किल कोई नई बात नहीं है। अपने लाड़ले की आँखों में आँसू देखकर भला किस माँ का कलेजा मुँह को न आएगा, सुमित की माँ अपनी आँखों में छलक पड़े आँसुओं को पल्लू में समेटते हुए बोली– ''बेटा! कल से मैं अपने हाथों से तुम्हारा टिफिन बनाऊँगी।''

शाम को सुमित के पिताजी जैसे ही घर में आए वह उनसे लिपटते हुए बोला– ''पिताजी! कल से माँ मेरे लिए अपने हाथों से टिफिन बनाएँगी।''

''यह तो बहुत अच्छी बात है कि अब तो तुम्हें अपनी माँ के हाथों की बनी स्वादिष्ट चीजें खाने को मिलेगी, तुम्हारी माँ दक्षिण भारत की है, वे इडली और डोसा बहुत अच्छा बनाती है, यही नहीं, सांभर तो इतना स्वादिष्ट बनाती है कि बस पीते ही जाओ... पीते ही जाओ। सुमित तुम भाग्यवान हो, तुम्हें तो ये सब मिल जाएगा मगर हमारे भाग्य में ऐसे स्वादिष्ट पदार्थ कहाँ है? कहते हुए उन्होंने सुमित का माथा चूम लिया।

''मान्यवर! आप चिंता न करें, आपको भी कल से नाश्ते में इडली–डोसा मिलेगा, यही नहीं, आप दोनों के लिए टिफिन भी बनेगा!'' कहते हुए सुमित की माँ किचन से बाहर आयी।

''ओह! तो श्रीमती जी हमारी बातें चोरी–चोरी सुन रही थीं।'' सुमित के पिताजी ने मुस्कुराते हुए कहा।

''श्रीमान्! आपको शायद ज्ञात नहीं, औरतों के कान बहुत तेज होते हैं।'' कनखियों से देखते हुए सुमित की माँ ने कहा।

''मगर भाग्यवान!, आप सुबह उठकर नाश्ता और टिफिन बनाएगी तो ऑफिस कौन जाएगा?'' सुमित के पिताजी ने प्रश्न किया।

जिसके उत्तर में सुमित की माँ ने उनकी ओर एक लिफाफा बढ़ाते हुए कहा– ''श्रीमान जी! ये लीजिए, इसमें नौकरी छोड़ने का नोटिस है, कल मेरे ऑफिस में दे देना, मेरे लिए अपने बेटे की खुशियों से बढ़कर कुछ नहीं है। नौकरी का क्या है, सुमित थोड़ा बड़ा हो जाएगा तो फिर कहीं कर लूँगी, पर इसका बचपन लौटकर आने वाला थोड़े ही है।''

''अति उत्तम, सुबह का भूला शाम को घर लौटता है तो भूला नहीं कहलाता है।''

सुमित के पिताजी ने गहरी साँस लेते हुए धीरे से कहा।

''कुछ कहा आप ने?''

सुमित की माँ ने तेज आवाज में पूछा।

''कुछ भी तो नहीं।'' कहते हुए वे अपने कमरे की ओर बढ़ गए।

– नवी मुंबई (महाराष्ट्र)

बौद्धिक क्रीडा

संस्कृत पहेलिका

चक्रं त्रिशूलं न हरं न विष्णु:।
स्त्रीवियोगी न च रामचन्द्र:।
इच्छाग्रगामी नृपतिर्न योगी
तर्हि वदतु स: क: अस्ति जीव:।।

हिन्दी भावार्थ

धरे चक्र त्रिशूल शिव है न विष्णु
स्त्री का वियोगी न वह राम ही है
मन हो वहाँ जाए राजा न योगी
अब तुम बताओ वो प्राणी कहीं है।

उत्तर–सांड

बाल लेखनी

चाँद, धरती और सूरज

– आयुष्मान सिंह

टिम–टिम करता नभ में तारा, कितना सुंदर है जग न्यारा।
चंदा धरती सारे गोल, सूरज चाचू हैं अनमोल।
चंदा मामा रोज ही आते, ठंडी–ठंडी चांदनी हैं फैलाते।
धरती मैया करती प्यार, जिस पर है सारा संसार।
गोल–गोल यह घूमती जाए, ढेरों गर्मी हैं बरसाते।
सुबह सबेरे उनको देखो, जीवन का यह भेद भी सीखो।
तीनों मिलकर खेल रचाते, हमको जीना ये सिखलाते।
खेल खेलते बादल आते, बारिश की बूँदें बरसाते।
ऐसे में धरती खूब नहाती, सुंदर हरी भरी हो जाती।
पक्षी करते चूँ–चूँ गान, देख के इनको खुश इंसान।
सूरज चाचू नित्य जगाते, आलस को हैं दूर भगाते।
पढ़ना–लिखना आगे बढ़ना, सपनों की सच्चाई गढ़ना।
तीनों मिलकर खेल रचाते, हमको ये जीना सिखलाते।।

– पिलखुवा (उ. प्र.)

भूल–भुलैया

ध से धनुष

– चाँद मोहम्मद घोसी

धनुर्धर रामसिंह तीरंदाजी का प्रदर्शन करने के लिए अपने हाथ में तीर लेकर रामलीला मैदान में फटाफट पहुँच गया। लेकिन धनुष लाना भूल गया। धनुष कुछ दूरी पर रखा हुआ है। प्रिय मित्रों आप रामसिंह को धनुष के पास पहुँचाने में सहायता करें ताकि वह अपनी कला का प्रदर्शन कर सके।

– मेड़ता सिटी
(राजस्थान)

बच्चों के सफल कवि, लेखक और सम्पादक : राधेश्याम प्रगल्भ

प्रस्तोता – डॉ. नागेश पांडेय 'संजय'

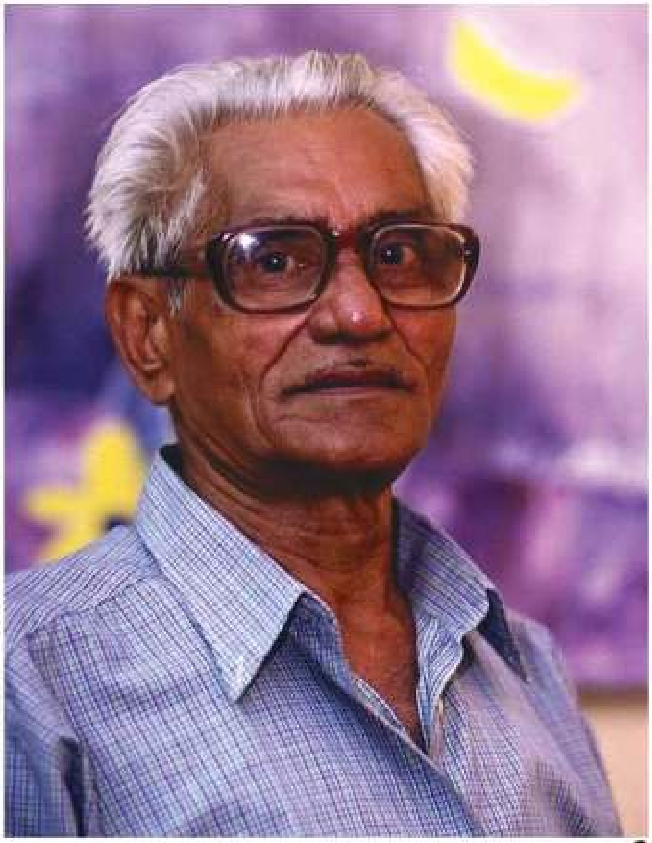

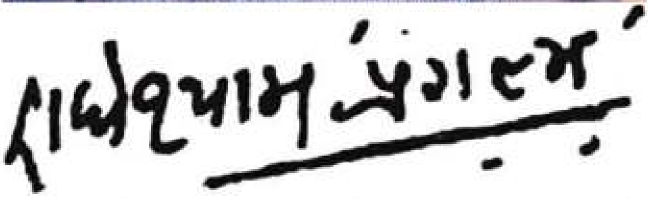

राधेश्याम प्रगल्भ बच्चों के सफल कवि, समर्थ लेखक और दक्ष सम्पादक थे। उनकी कविताओं में ज्ञान–विज्ञान, कथा साहित्य में सूझबूझ और चिंतन तथा संपादन में युगानुकूल सजगता दिखाई देती है। बाल मेला पत्रिका के माध्यम से उन्होंने बाल पत्रकारिता का गौरव बढ़ाया।

राधेश्याम प्रगल्भ का जन्म २० फरवरी, १९२९ को बुलंदशहर (उ. प्र.) के खुर्जा में हुआ था। उनके पिता कंछीलाल शर्मा और माता अहिल्यावती देवी साहित्यिक संस्कारों से सम्पन्न अभिभावक थे। कह सकते हैं कि प्रगल्भ जी के साहित्यिक संस्कारों के नेपथ्य में उनकी अप्रत्यक्ष भूमिका थी। उनके पिता को साहित्यिक रचनाओं के संग्रह का शौक था। अल्पवय में ही उनका निधन गया, तब प्रगल्भ जी मात्र छः वर्ष के थे। प्रगल्भ जी को उनकी माताजी ने 'कर्मण्यवाधिकारस्ते' का पाठ पढ़ाते हुए दु:ख से विचलित न होने का आत्मबल प्रदान किया। आध्यात्मिक प्रवृत्ति की उनकी माताजी स्वयं भजन लिखती और गाती थीं।

१६ वर्ष की अवस्था में ही वे उदीयमान कवि के रूप में चर्चित हो गए थे। हिन्दी और भूगोल में एम. ए. प्रगल्भ जी अध्यापक भी रहे। उन्होंने नगरपालिका में भी कार्य किया। किंतु उनका मन साहित्यिक संसार में रमा। पत्रकारिता को उन्होंने अपना पेशा बनाया और साहित्य जगत में कीर्तिमान स्थापित किए।

'प्रगल्भ जी' हाथरस और मथुरा में भी रहे। 'ब्रज कला केन्द्र' संस्था के माध्यम से उन्होंने रंगकर्म को भी खूब आगे बढ़ाया। १९७५ में वे अपने सुपुत्र प्रख्यात कवि डॉ. अशोक चक्रधर के साथ सहपरिवार दिल्ली आ गए।

राधेश्याम प्रगल्भ जी ने कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, जीवनी और समीक्षा विधाओं में प्रचुर लेखन किया। बच्चों के लिए लिखी उनकी प्रमुख कृतियाँ हैं : कस्तूरबा, पंचों का फैसला, राह अनेक : मंजिल एक, सूरज की बेटी, एक कटोरा पानी, अभिमन्यु, पांचाली, हंसता पेड़ : बोलती मैना, राजा और रंक, शाही हकीम, दोस्त की कुर्बानी, विवेकानंद प्रेमचंद इत्यादि।

अंतरराष्ट्रीय बाल वर्ष १९७९ में उनके द्वारा संपादित ग्रंथ 'बच्चों के बारह उपन्यास' को बाल साहित्य का अभिनव दस्तावेज माना जाता है।

उन्होंने ब्रजवासी प्रिंटर्स, नई दिल्ली से प्रकाशित मासिक पत्रिका 'बाल मेला' का सम्पादन भी किया। उनकी इच्छा थी कि बाल मेला बच्चों की सम्पूर्ण पत्रिका बने, जहाँ बच्चों को पूरी मस्ती मिले। खूब मनोरंजन हो। उनका मानसिक व्यायाम भी हो। ज्ञान बढ़े और अपनी प्रतिभा दिखाने का अवसर भी मिले। वे बाल मेला में बच्चों की रचनाओं को भी पूरे सम्मान के साथ, पूरे पृष्ठ पर छापते थे। बाल मेला रंग–बिरंगी छपती थी। चिकने और मजबूत कागज का प्रयोग होता था।

प्रगल्भ जी बाल मन के विशेषज्ञ थे। उन्होंने बाल मेला के एक वर्ष पूरे होने पर, वर्षगाँठ पर, मार्च १९९० में संपादकीय लिखा था, 'गाँठ लग गई, गाँठ बाँध लो', जो आज भी कितना प्रेरक और विचारणीय है–

प्यारे बच्चो,

तुम जानते ही हो कि गन्ने में रस होता है। पर वहाँ नहीं, जहाँ उसमें गाँठ पड़ जाती है (जहाँ गाँठ तह रस नहीं)। कविवर रहीम ने भी चेतावनी दी है– रहिमन धागा प्रेम का मत तोड़ो चटकाय। टूटे से फिर न जुरै, जुरै गाँठ परि जाय।।

काश! तुम्हारे रसमय जीवन में कभी कोई गाँठ न पड़े। यहाँ एक बात जान लेना आवश्यक है। गाँठ पड़ना बुरी बात होती है, गाँठ लगना नहीं। बाल मेला में बहुत सी कालजयी रचनाएँ प्रकाशित हुईं, जिन पर अलग से चर्चा की आवश्यकता है।

१३ मार्च, १९९९ को उनका निधन हो गया। आइए, उनकी कुछ विशिष्ट रचनाएँ पढ़ते हैं–

हमारी धरती

सुनो कहानी धरती माँ की, तुमको आज सुनाते हैं।
कैसे जन्म हुआ धरती का–यह तुमको बतलाते हैं।

कुछ कहते हैं– पहले नभ में सूरज था, थे कुछ तारे,
कुछ उनमें से बहुत बड़े थे, कुछ छोटे से बेचारे,
सूर्य गैस का पुंज, दहकता गोला है वह आग का,
धरती नाम इसी गोले के, है छोटे से भाग का।
कैसे पर यह हुआ सूर्य से अलग, तुम्हें समझाते हैं।
सुनो कहानी धरती माँ की, तुमको आज सुनाते हैं।

बड़ा सूर्य से तारा था एक, घूम रहा आकाश में,
जो कि घूमते हुए सूर्य के, एक दिन पहुँचा पास में,
बहुत बड़ा तारा था वह, दोनों आपस में टकराए,
उस तारे ने भाग सूर्य के, तोड़े कुछ औ' छिटकाए
छिटके हुए इन्हीं भागों में, धरती भी बतलाते हैं।
सुनो कहानी धरती माँ को, तुमको आज सुनाते हैं।

कुछ लोगों का है कहना, तारा न सूर्य से टकराया।
उनका मत है जब वह तारा, सूरज के समीप आया।
आकर्षण से उसके हिस्सा, सूरज का कुछ खिंच आया,
भाग हुए जिसके नौ, जिनमें एक धरित्री कहलाया।
धरती को इस कारण बेटी, सूरज की ठहराते हैं,
सुनो कहानी धरती माँ की, तुमको आज सुनाते हैं।

धरती की ही तरह सूर्य से, भाग आठ जो थे छिटके,
उनमें कुछ हैं उससे भारी औ' कुछ हैं उससे घटके,
बड़े और भारी धरती से गुरु और शनि केवल हैं,
जो छोटे–वे अरुण, वरुण, बुध, शुक्र, यम और मंगल हैं।
धरती और ये आठ भाग, सब के सब ग्रह कहलाते हैं,
सुनो कहानी धरती माँ की, तुमको आज सुनाते हैं।

मत नवीन औ' मान्य कि धरती का न सूर्य से जन्म हुआ,
सारे ग्रह, तारागण का निर्माण, एक ही साथ हुआ,
नभ में पहले न तो सूर्य था, और न चाँद–सितारे थे,
ब्रह्मांडी बादल से ही, ब्रह्मांड बना बतलाते हैं,
सुनो कहानी धरती माँ की, तुमको आज सुनाते हैं।

बीते वर्ष और धरती से भाग छिटक एक दूर हुआ,
उपग्रह कहते जिसे नाम से, चंदा के मशहूर हुआ,
धरती की ही तरह और भी हैं, कुछ ग्रह उपग्रह वाले,
हैं जिनमें शनि और गुरु सबसे ज्यादा उपग्रह वाले
ग्रह, उपग्रह सब मिलकर, सूरज का परिवार बनाते हैं,
सुनो कहानी धरती माँ की, तुमको आज सुनाते हैं।

सपने में चाहा

सपने में चाहा नदी बनूँ, बन गया नदी,
कोई भी नाव डुबोई, मैंने नहीं कभी,
मैंने चाहा मैं बनूँ फूल, बन गया फूल,
बन गया सदा, मुसकाना ही मेरा उसूल
मैंने चाहा मैं मेह बनूँ, बन गया मेह,
बूँद-बूँद बरसाती रही मेरी नेह
मैंने चाहा मैं छाँह बनूँ, बन गया छाँह,
बन गया पथिक हारे का, मैं आरामगाह,
मैंने चाहा मैं व्यक्ति बनूँ, सीधा-सच्चा,
खुल गई आँख, मैंने पाया मैं था बच्चा!

गरीबी के घर में

इकतारे पर मधुर कंठ से भजन गाते हुए एक भिखारी कैलाश के दरवाजे पर आ पहुँचा। कैलाश की माँ ने कैलाश को पुकारा- ''कैलाश! देख तो, शायद सूरदास आए हैं। इन्हें थोड़ा आटा दे दे, बेटा।''

कैलाश बाहर खेल रहा था। माँ की बात सुन दौड़ा-दौड़ा अंदर गया। वह एक कटोरी में आटा ले आया। बाहर आकर भिखारी से बोला- ''लो बाबा।'' भिखारी ने झोली आगे कर दी। कैलाश ने उसकी झोली में आटा डाल दिया। गायक भिक्षुक इकतारे पर धुन बजाता-गाता चला गया।

उसके जाने के बाद कैलाश ने अपनी माँ से पूछा- ''माँ! आप इन साधु का नाम कैसे जानती हैं? इनका नाम सूरदास है न?''

माँ ने कहा- ''बेटा! तूने शायद ध्यान से नहीं देखा। इन महात्मा के नेत्र नहीं हैं। अंधे व्यक्ति को आदर देने के लिए सूरदास के नाम से पुकारते हैं।''

कैलाश बोला- ''माँ! हमारी पुस्तक में सूरदास नाम के एक कवि के पद हैं। क्या वह यही

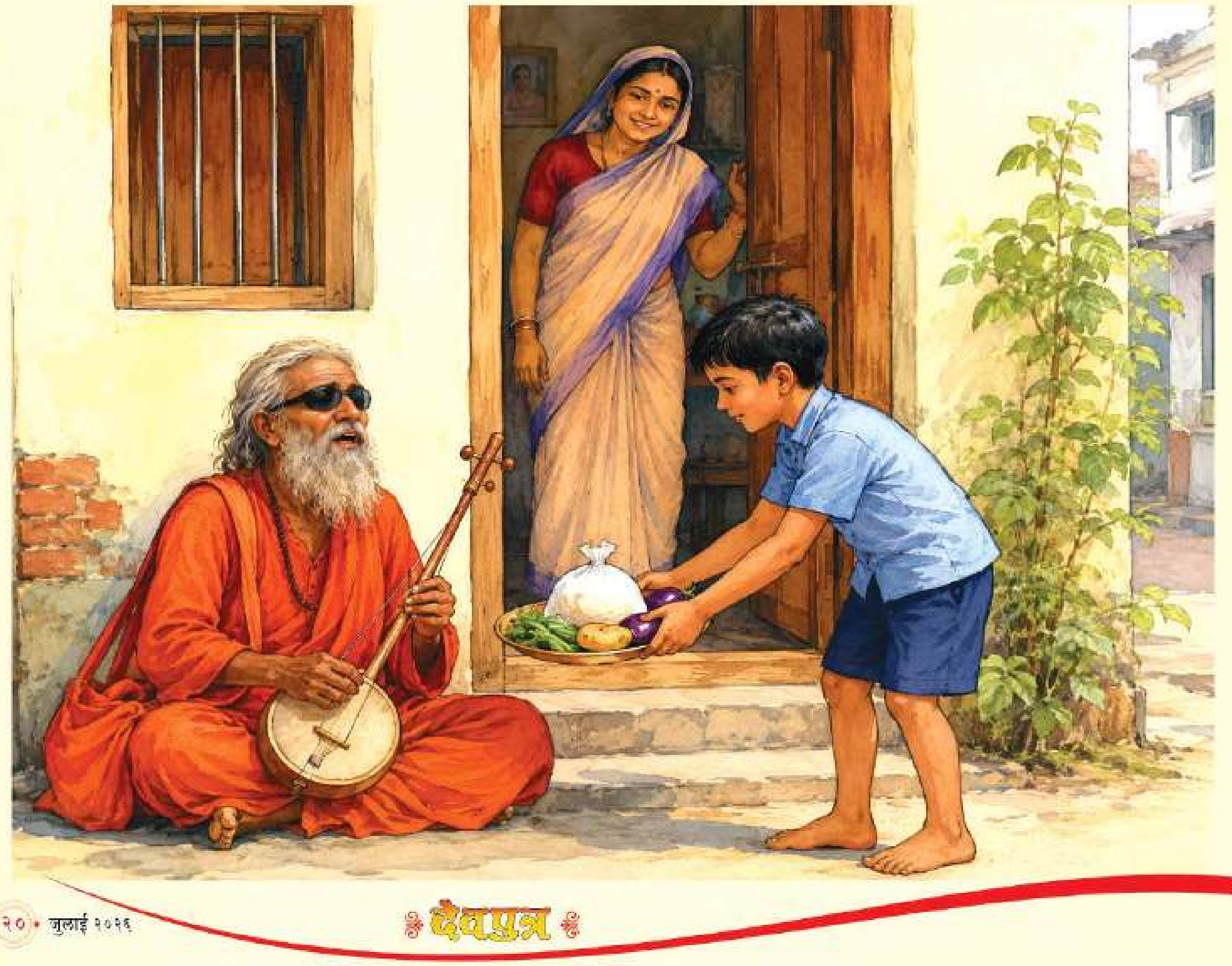

सूरदास हैं?''

''नहीं बेटा! वह यह नहीं हैं। वह तो बड़े प्रसिद्ध कवि थे। अब से लगभग पाँच-सौ वर्ष पूर्व उनका जन्म हुआ था। वह और तुलसीदास एक ही काल के कवि हैं। उनके समय में हमारे देश में सम्राट अकबर का शासन था।

वह जन्म से अंधे थे। इसीलिए उनका नाम सूरदास पड़ गया था।''

''क्या वह भी भिखारी थे?''

''नहीं, वह भिखारी नहीं थे। हाँ, उन्होंने घर अवश्य बचपन में ही त्याग दिया था।''

''माँ! हमारी पुस्तक में श्रीकृष्ण के बचपन के बारे में उनके कई पद हैं। मुझे वे पद बहुत अच्छे लगते हैं। हमारे गुरुजी कहते हैं कि सूरदास कृष्ण के परम भक्त थे।''

''तुम्हारे अध्यापक ठीक कहते हैं, बेटा! सूरदास श्रीकृष्ण के और तुलसीदास श्रीराम के परम भक्त थे। सूरदास ने अपनी कविता का विषय श्रीकृष्ण को बनाया। तुलसीदास की कविता के विषय श्रीराम थे। ये दोनों ही संत महान कवि हुए हैं। इन पर हिंदी भाषियों को ही नहीं सारे देशवासियों को गर्व है।''

माँ ने इतना कहा तो कैलाश को कुछ और जानने की इच्छा हुई। वह बोला, ''माँ! मुझ सूरदास के बारे में कुछ विस्तार से बताओ।''

कैलाश की माँ ने कहना प्रारंभ किया- ''दिल्ली से मथुरा को जो राजमार्ग जाता है उस पर बल्लभगढ़ पड़ता है। उसके निकट सीही नाम का एक गाँव था। यहीं कभी राजा परीक्षित के पुत्र जनमेजय ने सर्पयज्ञ किया था। इसी गाँव में एक सारस्वत ब्राह्मण के घर वर्ष १४७८ में एक अंधे बालक ने जन्म लिया था। ब्राह्मण बहुत गरीब था।

बालक जन्म का अंधा था। इसलिए बालक के जन्म पर माता-पिता ने कोई आनंद नहीं मनाया। गरीब के घर में अंधे बालक का जन्म लेना बालक और माँ-बाप दोनों के लिए अभिशाप सा हो गया। पर इसी अंधे बालक को संसार ने आगे चलकर भक्त कवि सूरदास के नाम से जाना।

सूरदास के तीन बड़े भाई थे। ऐसी हालत में यदि उनके माता-पिता का सूरदास पर कोई स्नेह नहीं था, तो कोई अचरज की बात नहीं। उनके माता-पिता अधिकांश सोचते- 'यहाँ तो आए दिन वैसे ही फाके रहते हैं। दोनों जून भोजन भी नहीं जुट पाता। इस नेत्रहीन की सेवा-टहल कौन करेगा!'

ऐसे ही सूरदास छः वर्ष के हो गए। घरवालों के मन के भाव उनसे छिपे न रह सके। वह भी समझ गए थे कि उस घर में उनकी कोई आवश्यकता नहीं है। वह किसी के कोई काम नहीं आ सकते हैं। इसी से सब लोग उनकी उपेक्षा करते हैं। जैसे-जैसे समय बीतेगा, घरवाले और अधिक उपेक्षा करेंगे। ऐसे विचार बालक सूरदास के मन में अधिकांश आते। इसीलिए उनमें वैराग्य के से भाव पनपने लगे।

एक दिन सूरदास के पिता को उनके एक यजमान ने दो मोहर दान में दीं। वह बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने घर आकर बताया। सब बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने कहा, ''कल मैं खाने-पीने का काफी सामान ले आऊँगा। दो-चार महीनों का तो काम चल ही जाएगा।''

सूरदास के पिता ने दोनों मोहरें कपड़े में बाँधकर एक आले में रख दीं। रात को उन दोनों मोहरों को चूहे खींच ले गए। सुबह होने पर उन्हें आले में मोहर नहीं मिलीं। वह बहुत दुःखी हुए।

सूरदास ने अपने पिता को समझाने का प्रयत्न किया। इस पर वह उल्टे सूरदास पर ही भड़क गए। 'इस घर में तू ही बुरी घड़ी में जन्मा है। जब से तू इस घर में आया है, तब से ही हम पर आए दिन कोई न कोई आफत आ पड़ती है। एक घड़ी भी चैन से नहीं बीतती। भगवान की कृपा से दो मोहरें मिलीं थीं वे भी तेरे बुरे नक्षत्रों के कारण गुम हो गईं।'

भक्त सूरदास

सूरदास को पिता का यह उलाहना अच्छा नहीं लगा। 'किसी को भी अच्छा नहीं लग सकता।' कैलाश बीच में बोला। कैलाश की माँ ने सहमति प्रकट की। फिर आगे कहना प्रारंभ किया।

''तुमने भी एक बात का अनुभव किया होगा। अंधे व्यक्ति की अन्य ज्ञानेंद्रियाँ बड़ी सजग हो जाती हैं। उसको सुनने, सूंघने की शक्ति और लोगों से अधिक होती है। भले ही वह देख न सके, किन्तु सुनकर, सूंघकर या छूकर वह बहुत-सी चीजों का सही-सही ज्ञान प्राप्त कर लेता है। उसके नेत्रों की कमी को प्रकृति इस प्रकार पूरा करती है। उसकी स्मरण शक्ति भी सामान्य लोगों से अधिक होती है।''

कैलाश ने अपनी माँ का समर्थन किया- ''आप बिलकुल ठीक कह रही हैं। उस दिन मैं और विनोद पिक्चर देखने गए थे न।''

''हाँ, गए तो थे।'' माँ ने कहा। ''कोई विशेष बात?''

''हमारे साथ विनोद के बड़े भाई भी गए थे। वह बेचारे नेत्रहीन हैं। आप विश्वास कीजिए, उन्होंने पूरी कहानी सुना दी। कुछ संवाद तो ज्यों के त्यों बोल दिए। इतना ही नहीं, हर गीत की कई पंक्तियाँ उन्हें याद हो गई थीं।''

माँ बोली, ''नेत्रहीन व्यक्ति हर बात को बड़े ध्यान से सुनता है। इसीलिए उसे सब कुछ शीघ्र ही स्मरण हो जाता है। साथ ही वह उसे बहुत समय तक याद रहता है।

यही बात सूरदास के साथ भी थी। वह एक-एक बात को अपने ध्यान में बैठा लेते थे। इसी से उनका अनुमान प्राय: ठीक ही बैठता था।

सूरदास ने ध्यान दौड़ाया। अचानक उन्हें याद आया। रात में उन्होंने चूहों की खटर-पटर सुनी थी। किसी वस्तु के गिरने की भी मामूली सी आवाज हुई थी। उन्होंने अनुमान लगाया, हो न हो, रात में चूहे ही मोहरों को खींच ले गए हों। वह अपने पिता ने बोले, ''मैं आपकी मोहरों का पता बता सकता हूँ। पर एक शर्त है। फिर आप मुझे यहाँ से चला जाने देंगे?''

निर्धन पिता को तो मानो एक साथ ही दो वरदान मिल रहे थे। खोई हुई मोहरों का मिलना और सूरदास का घर से जाना। तुरंत ही बोले, ''भैया! तू हमारी मोहर हमें दिला दे। फिर तू जहाँ तेरा मन हो वहाँ चले जाना।''

इतना सुनते ही सूरदास ने कहा- ''आपकी मोहरों को चूहे खींचकर ले गए हैं। घर में चूहे के किसी बिल में मोहरें मिलेंगी।''

चूहों के बिल खोजे गए। काफी खोजबीन के बाद छत में बने चूहे के एक बिल में मोहरों की गाँठ मिल गई। सूरदास के माता-पिता मोहरों को पाकर प्रसन्न हो उठे। किंतु सूरदास ने तुरंत ही घर त्यागने की बात कही। इस पर माता-पिता के हृदय में उनके प्रति मोह जागा। उन्होंने कहा, ''अब तो हमें यह धन मिल ही गया है। कुछ दिन चैन से कट जाएँगे। फिर तुम घर छोड़कर क्यों जाते हो?''

सूरदास के माता-पिता मोहरों को पाकर प्रसन्न हो उठे। किन्तु सूरदास ने तुरंत ही घर त्यागने की बात कही। इस पर माता-पिता के हृदय में उनके प्रति मोह जागा। उन्होंने कहा, 'अब तो हमें यह धन मिल ही गया है। कुछ दिन चैन से कट जाएँगे। फिर तुम घर छोड़कर क्यों जाते हो?'

'तो क्या सूरदास ने छ: वर्ष की आयु में ही घर छोड़ दिया था?'

'हाँ बेटा।'

'बड़े कठोर थे उनके माता-पिता?'

'गरीबी बहुत बुरी चीज होती है, बेटा।' कहकर माँ ने एक लंबी साँस खींची। कैलाश का भी मन भारी हो गया था। इसलिए उसने माँ से और कुछ नहीं पूछा।

- शाहजहाँपुर (उ. प्र.)

परीक्षा

– डॉ. हनुमान प्रसाद 'उत्तम'

शिक्षा सत्र पूरा होने पर आचार्य ने शिष्यों के बुद्धि एवं धैर्य की परीक्षा लेने को सभी शिष्यों के हाथ में बाँस की खपचियों से बनी टोकरियाँ थमाते हुए कहा–

''इनमें नदी से जल भर कर लाना है और विद्यालय भवन की सफाई करनी है।''

यह सुनकर सभी शिष्य असमंजस में पड़ गए कि भला खपचियों की टोकरी में जल भर कर लाना कैसे संभव है, किन्तु फिर भी सभी ने टोकरिया उठाईं और नदी पर गए, किंतु प्रयास करने पर भी टोकरियों के छिद्रों में से जल रिसा जाता।

हताश शिष्यों ने लौटकर गुरु को वस्तुस्थिति से अवगत कराया।

किंतु एक छात्र, जो कर्त्तव्य के प्रति गंभीर था तथा जिसमें गुरु के प्रति पूर्ण निष्ठा थी, यह सोचकर बार–बार जल भरता कि गुरुदेव के वाक्य मिथ्या तो हो ही नहीं सकते।

प्रात: से सायं तक जल में टोकरी के भीगते रहने से खपाचियाँ फूल गई थीं, जिससे छिद्र बंद हो गए थे। अत: शाम को वह टोकरी में जल लेकर ही विद्यालय वापस लौटा।

अब गुरु ने शिष्यों को इकट्ठा किया और परिश्रम का महत्व बताते हुए कहा–

''कार्य तो मैंने अकल्पनीय और कठिन सौंपा था, किंतु विवेक, धैर्य, लगन, निष्ठा और निरंतर प्रयास से कठिन कार्य भी संभव हो सकता है।

– कानपुर नगर (उ. प्र.)

रखिये गुरु की बात में, अटल अचल विश्वास।
नसै निराशा, हृदय में, फैले ज्ञान उजास।।

इसरो दर्शन : एक शैक्षणिक भ्रमण

सरस्वती शिशु मंदिर, शंकरगढ़ के विद्यार्थियों द्वारा एक अत्यंत प्रेरणादायक एवं ज्ञानवर्धक इसरो शैक्षणिक भ्रमण का आयोजन किया गया। यह यात्रा २५ अप्रैल २०२६ को शंकरगढ़ (छत्तीसगढ़) से प्रारंभ होकर ३० अप्रैल २०२६ को दोपहर में पुन: शंकरगढ़ वापसी के साथ संपन्न हुई। इस दौरान विद्यार्थियों ने बैंगलुरू (कर्नाटक) के प्रमुख शैक्षणिक एत्तं आध्यात्मिक स्थलों– U. R. Rao Satellite Centre (ISRO) ईशा फाउंडेशन (आदियोगी, चिक्कबल्लापुर) तथा विज्ञान संग्रहालय (Bangalore Science Museum) का भ्रमण किया।

प्रेरणा का स्रोत

लगभग दो वर्ष पूर्व हमारे विद्यालय में प्रधानाचार्य जी के मार्गदर्शन में एक ऑनलाइन सत्र आयोजित किया गया था। इसमें इसरो की वैज्ञानिक सुरभि जी एवं कृतिका जी ने विद्यार्थियों को Space Science के मूल सिद्धांत, उपग्रहों की कार्यप्रणाली तथा अंतरिक्ष अनुसंधान के महत्व के बारे में बताया।

इसके साथ ही सिद्धार्थ मौर्य जी (Product Manager, Applied Materials, Israel) ने करियर मार्गदर्शन देते हुए यह समझाया कि कैसे विद्यार्थी सही दिशा, परिश्रम और लक्ष्य निर्धारण के माध्यम से अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी अपनी पहचान बना सकते हैं।

यह कार्यक्रम हम सभी विद्यार्थियों के लिए एक 'प्रकाश स्तंभ' सिद्ध हुआ। उसी दिन हमने संकल्प लिया कि हम इसरो जैसी महान संस्थाा को प्रत्यक्ष रूप से देखेंगे और समझेंगे। प्रधानाचार्य श्री. लक्ष्मीप्रसाद नारायण जी ने हमारे इस संकल्प का समर्थन किया।

योजना निर्माण एवं चुनौतियाँ

इस यात्रा को साकार करने के लिए विद्यालय परिवार द्वारा निरंतर प्रयास किए गए। कई बार परीक्षाओं, विद्यालयीन कार्यक्रमों और मौसम की बाधाओं के कारण योजना में विलंब हुआ।

अंतत: नवंबर माह में इसरो से २८ अप्रैल २०२६ को U. R. Rao Satellite Centre के भ्रमण की अनुमति प्राप्त हुई। यह वही केंद्र है जहाँ भारत के अनेक महत्वपूर्ण उपग्रहों का निर्माण एवं परीक्षण किया जाता है।

इसके बाद विद्यार्थियों में उत्साह चरम पर था और सभी ने पूरी तैयारी के साथ यात्रा की योजना को अंतिम रूप दिया।

यात्रा का प्रारंभ (२५ अप्रैल २०२६)

निर्धारित तिथि पर सभी विद्यार्थी अपने अभिभावकों के साथ विद्यालय परिसर में एकत्रित हुए। आवश्यक निर्देश, सुरक्षा नियम एवं यात्रा से संबंधित जानकारी दी गई।

विद्यालय से बस द्वारा यात्रा प्रारंभ हुई। शंकरगढ़ से अंबिकापुर तक की यात्रा में खराब सड़कों एवं धूल भरे मार्ग का सामना करना पड़ा, जिससे थोड़ी असुविधा हुई, परन्तु उत्साह में कोई कमी नहीं आई।

अंबिकापुर पहुँचकर विद्यार्थियों ने ऑटो (टेम्पू) के माध्यम से रेलवे स्टेशन तक यात्रा की। रास्ते में गाँधी चौक से गुजरते हुए स्थानीय परिवहन का अनुभव भी प्राप्त हुआ।

रेल यात्रा का अनुभव

रेलवे स्टेशन पर विद्यार्थियों ने सामूहिक रूप से भोजन किया– ब्रेड पकोड़ा, पूरी–सब्जी आदि का आनंद लेते हुए आपसी सहयोग और भाईचारे की

भावना को मजबूत किया।

इसके बाद ट्रेन द्वारा उसलापुर (बिलासपुर) के लिए प्रस्थान किया गया। वहाँ से बिलासपुर जंक्शन पहुँचे, जहाँ विद्यार्थियों के लिए पोहा, जलेबी एवं चाय की उत्तम व्यवस्था की गई।

रायपुर रेलवे स्टेशन पर संगठन मंत्री डॉ. देवनारायण जी साहू द्वारा विद्यार्थियों का स्वागत किया गया। उन्होंने मिठाई, फल एवं विद्या भारती की पुस्तकें भेंट कर विद्यार्थियों को आशीर्वाद एवं शुभकामनाएँ दीं। इसके पश्चात लंबी रेल यात्रा करते हुए सभी विद्यार्थी बेंगलुरू (कर्नाटक) पहुँचे, जो भारत का प्रमुख टेक्नोलॉजी एवं स्पेस रिसर्च हब माना जाता है।

ईशा फाउंडेशन (आदियोगी)– आध्यात्मिक अनुभव

बेंगलुरू के येलहंका रेलवे स्टेशन से विद्यार्थियों को बस द्वारा चिक्कबल्लापुर स्थित ईशा फाउंडेशन ले जाया गया, जो प्रसिद्ध नंदी हिल्स के समीप स्थित है।

यहाँ स्थित आदियोगी शिव प्रतिमा, जिसकी ऊँचाई ११२ फीट है, विश्व की सबसे ऊँची शिव प्रतिमाओं में से एक है। इसका निर्माण मानव जीवन के ११२ मार्गों को दर्शाने के लिए किया गया है।

यहाँ विद्यार्थियों ने योगेश्वर लिंग के समीप ध्यान एवं साधना की। विशाल नाग प्रतिमा के दर्शन किए। सायंकालीन लाइट एंड साउंड शो का आनंद लिया, जिसमें आदियोगी की कथा को अत्यंत आकर्षक रूप में प्रस्तुत किया गया।

यह स्थान न केवल आध्यात्मिक ऊर्जा का केंद्र है, बल्कि मानसिक शांति और आत्मचिंतन का भी अद्भुत अवसर प्रदान करता है।

ISRO भ्रमण– U. R. Rao Satellite (२८ अप्रैल २०२६)

यह यात्रा का सबसे महत्वपूर्ण और प्रतीक्षित भाग था। विद्यार्थियों को बस द्वारा ISRO के U. R. Rao Satellite Centre (URSC), बेंगलुरू ले जाया गया।

यह केंद्र भारत के प्रमुख उपग्रह निर्माण संस्थानों में से एक है, जहाँ: INSAT, IRS, Navigation Satellites जैसे कई महत्वपूर्ण उपग्रह विकसित किए जाते हैं।

भ्रमण के मुख्य बिंदु:

१) स्वागत एवं सुरक्षा जानकारी:

इसरो के अधिकारियों ने संस्थान का परिचय और सुरक्षा नियमों की जानकारी दी।

२) रॉकेट लॉन्च प्रक्रिया:

वीडियो के माध्यम से PSLV (Polar Satellite Launch Vehicle) और GSLV (Geosynchronous Satellite Launch Vehicle) की लॉन्चिंग प्रक्रिया समझाई गई।

३) प्रदर्शनी कक्ष:

यहाँ विभिन्न रॉकेट एवं उपग्रहों के वास्तविक मॉडल प्रदर्शित थे, जिनसे उनकी संरचना और कार्यप्रणाली को समझने का अवसर मिला।

४) स्पेस एप्लीकेशन:

विद्यार्थियों ने जाना कि उपग्रह कैसे: मौसम पूर्वानुमान, टीवी एवं मोबाइल संचार, GPS नेविगेशन, आपदा प्रबंधन (बाढ़ चक्रवात आदि) में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

५) मिशन कंट्रोल सेंटर:

यहाँ वैज्ञानिकों ने बताया कि रॉकेट लॉन्च के दौरान हर सेकंड की मॉनिटरिंग कैसे की जाती है।

६) सैटेलाइट निर्माण प्रक्रिया:

उपग्रहों को क्लीन रूम में अत्यधिक सावधानी से तैयार किया जाता है, जहाँ धूल का एक कण भी प्रवेश नहीं कर सकता।

७) इंटरएक्टिव सत्र:

विद्यार्थियों ने वैज्ञानिकों से सीधे प्रश्न पूछे और करियर मार्गदर्शन प्राप्त किया– जैसे ISRO में चयन की प्रक्रिया, आवश्यक योग्यता और पढ़ाई का मार्ग।

निष्कर्ष एवं अनुभव: यह संपूर्ण यात्रा विद्यार्थियों के लिए जीवन का एक अविस्मरणीय अनुभव रही। इससे: विज्ञान के प्रति रुचि और बढ़ी, करियर के प्रति स्पष्टता आई, आत्मविश्वास और प्रेरणा का विकास हुआ इस शैक्षणिक भ्रमण ने यह सिद्ध कर दिया कि सपने तभी साकार होते हैं जब उन्हें लक्ष्य बनाकर निरंतर प्रयास किया जाए।

– शंकरगढ़ (छ. ग.)

बन्दर भैया

– विज्ञान व्रत

बंदर भैया बने मिनिस्टर
दिल्ली में है बंगला–दफ्तर
कुरता पहना, धोती बाँधी
गाँधी–टोपी रक्खी सर पर
चाल–ढाल में बड़ी अकड़ है
मगर नमस्ते करते झुक कर
टेलीफोन लगा दफ्तर में
चार सौ बीस है जिसका नम्बर
बाहर 'तिकड़म' नाम लिखा है
तख्ती लटकी दरवाजे पर
सैर–सपाटे करते फिरते
घर से गायब रहते दिन–भर
काम–धाम तो जरा न करते
उद्घाटन ही करते अक्सर
फुरसत नहीं उन्हें मिलने की
जनता काटे उनके चक्कर
बन्दरी भाभी मिलने आयी
दरबानों ने रोका बाहर
आग–बबूला होकर बोली
भूल गए क्या मुझको बंदर ?

– नोएडा (उ. प्र.)

धूल रहित थ्रेसर

– रजनीकांत शुक्ल

उस दिन उत्तर प्रदेश के बाराबंकी जिले के उच्च प्राथमिक विद्यालय अगेहरा में पढ़ाई चल रही थीं। शाला के आसपास गेहूँ के खेत थे जिनमें से पके गेहूँ के गट्ठरों को काटकर थ्रेशर के माध्यम से भूसे और गेहूँ को अलग किया जा रहा था। किन्तु इस प्रक्रिया में बहुत सारी भूसा मिश्रित धूल उड़ रही थी। हवा के साथ उड़ती हुई जब धूल शाला की तरफ आई तो साँस लेने के साथ भूसे की धूल नाक के अंदर जाने लगी। जिससे बच्चों को साँस लेने में भी परेशानी होने लगी। इसकी वजह से वे खाँसने लगे।

बच्चों की यह परेशानी देखकर कक्षा आठ में पढ़ने वाली पूजा ने अपने शिक्षक राजीव जी से पूछा– सर, यह इतने सब लोगों को परेशानी हो रही है। इसका कोई समाधान नहीं है क्या ?

राजीव सर ने कहा– समस्या को गहराई से देखोगे तो समाधान उसी में कहीं छिपा मिल जाएगा।

पूजा को जब पढ़ाई से छुट्टी मिली तो वह वहीं जाकर खड़ी हो गई। उसने देखा कि भूसे की धूल थ्रेसर से निकलती हुई उड़कर चारों ओर फैल रही है। तभी उसकी निगाह सामने एक दूसरे खेत में भरे हुए पानी की ओर गई जिसके ऊपर उस भूसे की धूल ने गिरते–गिरते एक परत जमा ली थी।

पूजा ने मन ही मन प्रश्न किया कि क्या ऐसा नहीं हो सकता कि इस पानी का ही उपयोग करके भूसे की धूल को वातावरण में उड़ने से रोका जाय ताकि यह अनचाहे लोगों में साँस संबंधी बीमारियाँ न पैदा करे।

बस अपनी इसी सोच को मूर्त रूप देने के लिए उसने शाला में सलाह करके तरह–तरह के प्रयोग करने शुरू कर दिए। भूसे और उसकी धूल को कैसे अलग–अलग किया जाए। वह इस चिंता में लग गई। सोचा कि को झोले जैसी चीज उसमें छेद करके भूसा रोकने के लिए लगा दी जाए। फिर एक दिन आटा छानने वाली छलनी को देखकर भूसे को रोकने के लिए जाली लगाने का विचार उसके मन में आया। और फिर इसका कार्यशील मॉडल बनाने की तैयारियाँ शुरू कर दीं। शुरू में उसने अपने विकसित किए जाने वाले यंत्र में कागज का परदा लगाया लेकिन उससे काम नहीं बना तो फिर इसे लकड़ी का बनाया गया किन्तु पंखा और जाली लगाने में इसमें अभी दिक्कत हो रही थी। इसके बाद पुरानी टीन को वहाँ लगाकर इसका कार्यशील मॉडल तैयार किया गया। इस तरह अब यह 'भूसा–धूल पृथक्करण यंत्र' बनकर पूरी तरह तैयार हो गया। जिसमें जब मशीन चलती है तो भूसा तेज हवा के साथ सामने की जाली से टकराकर नीचे गिर जाता है और वहाँ लगे पंखे की हवा से उसकी धूल उड़कर वहाँ रखे पानी के टैंक के सहारे जमा हो जाती थी। जैसे आटा चक्की में हम कपड़े की सहायता से आटा निकालते हैं उसी तरह से इस भूसे वाली धूल को भी निकाला जा सकता है। इस धूल को किसान बेच सकते हैं जिसका उपयोग आग जलाने के लिए गोले प्लाईबोर्ड बनाने और खेत के लिए खाद बनाने में किया जा सकता है।

उस समय पूजा को अपने इस मॉडल बनाने की

धुन में लगे देखकर गाँव के लोग हँसते थे और पूछते थे कि यह क्या बना रही हो इससे तुम्हें क्या प्राप्त होगा? किन्तु पूजा अपनी धुन में लगी रही।

पूजा सहित उनके परिवार में कुल सात सदस्य हैं उनके पिता पुत्ती लाल राज मिस्त्री का काम करते हैं उनकी माता सुनीला देवी एक शाला में भोजन माता यानी रसोईये के रूप में काम करती हैं। उनका छप्पर का घर है जिसमें उन्होंने ढिबरी की रोशनी में अपनी पढ़ाई की है। ऐसी विपरीत घरेलू आर्थिक परिस्थितियों से जूझते हुए पूजा ने जुनून के चलते अपने शाला शिक्षक की सहायता से इस कार्य में सफलता पाई।

पूजा की असाधारण प्रतिभा से बनाए गए इस मॉडल को काम करते देखकर सभी लोगों ने मुक्त कंठ से उसकी प्रशंसा की। पूजा ने अपना यह मॉडल जिला मंडल और राज्य पर प्रस्तुत किया और फिर उसको अनुसंधान और नवाचार के लिए पहल वाले राष्ट्रीय मेले २०२४ में भाग लेने का भी अवसर मिला।

उसे राष्ट्रीय स्तर पर इंस्पायर मानक २०२३-२४ योजना में चुने गए शीर्ष साठ मॉडल में स्थान मिला। इसमें पूजा अपने मॉडल के साथ पूरे उत्तर प्रदेश राज्य से चुनी जाने वाली अकेली प्रतिभागी थी। यह भारत सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग की प्रमुख योजना है जो वर्ष २००६ में प्रारंभ हुई थी यह योजना कक्षा छ: से दस तक के दस से पंद्रह वर्ष की आयु के स्कूली बच्चों में वैज्ञानिक सोच और नवाचार को बढ़ावा देती है। इसमें विद्यार्थियों को अपना मॉडल या परियोजना विकसित करने के लिए दस हजार रुपए की सहायता राशि सीधे उनके बैंक खाते में आती है। पूजा को भी अपने इस कार्यशील मॉडल बनाने के लिए दस हजार रुपए की सहायता मिली थी।

उपरोक्त योजना में चुने गए साठ मॉडल बनाने वाले बच्चों को जापान के प्रतिष्ठित सकुरा विज्ञान विनिमय कार्यक्रम में जाने का अवसर मिलता है २०२५ के लिए यह अवसर पूजा को भी मिला। ऐसा तो

पूजा ने कभी सोचा भी नहीं था कि उसका यह जुनून उसे सुदूर देश जापान की सैर करवा देगा। पूजा इस कार्यक्रम में शामिल होने के साथ-साथ जापान की राजधानी टोकियो भ्रमण की मधुर स्मृतियों को लेकर वहाँ से वापस लौटी। पूजा के माता-पिता उसकी इन उपलब्धियों से बहुत खुश हैं। इधर पूजा के बनाए इस भूसा-धूल पृथक्करण यंत्र का पेटेंट कराने का जिम्मा विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय ने ले लिया।

इस तरह अपने जुनून के चलते सत्रह वर्ष की पूजा देशभर के युवा शिक्षार्थियों के लिए नवाचार और दृढ़ संकल्प का प्रतीक बन गई।

पर्यावरण के क्षेत्र में उनके इस उत्कृष्ट योगदान के लिए पूजा को देश की राष्ट्रपति महोदया द्रौपदी मुर्मू जी द्वारा वीर बाल दिवस २६ दिसम्बर २०२५ के अवसर पर प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

नन्हे मित्रो!

सोचो सच्चे मन से जो तो क्या कुछ कर जाओ
जिसको सोचा भी न कभी वो मीठा फल खाओ।
मेहनत नहीं अकारथ जाती, कभी देख लो तुम
खुद के तन मन भी हर्षित हों सब को हर्षाओ।

- नई दिल्ली

अभिमन्यु का वध

– मोहनलाल जोशी

महाभारत युद्ध चल रहा था। दसवें दिन भीष्म पितामह युद्ध से हट जाते हैं। फिर द्रोणाचार्य सेनापति बनते हैं। तेरहवें दिन द्रोणाचार्य चक्रव्यूह रचते हैं। उस दिन अर्जुन युद्ध करने बहुत दूर गया होता है। चक्रव्यूह अर्जुन और अभिमन्यु ही तोड़ना जानते थे।

अभिमन्यु चक्रव्यूह तोड़ देता है। वह चक्रव्यूह के केन्द्र में पहुँच जाता है। उसे चक्रव्यूह से निकलना नहीं आता। कौरवों के अनेक योद्धा मिलकर अभिमन्यु को मार देते हैं। अभिमन्यु का अन्याय पूर्ण वध हो जाता है।

यह बात अर्जुन को पता लगती है। वह अगले दिन जयद्रथ के वध की प्रतिज्ञा करता है। दूसरे दिन जयद्रथ कौरव सेना के पीछे छिप जाता है। भगवान कृष्ण समय से पहले सूर्यास्त कर देते हैं। जयद्रथ सामने आ जाता है। श्रीकृष्ण सूर्य को प्रकट कर देते हैं। अभी रात नहीं हुई थी। अर्जुन जयद्रथ का वध कर देता है।

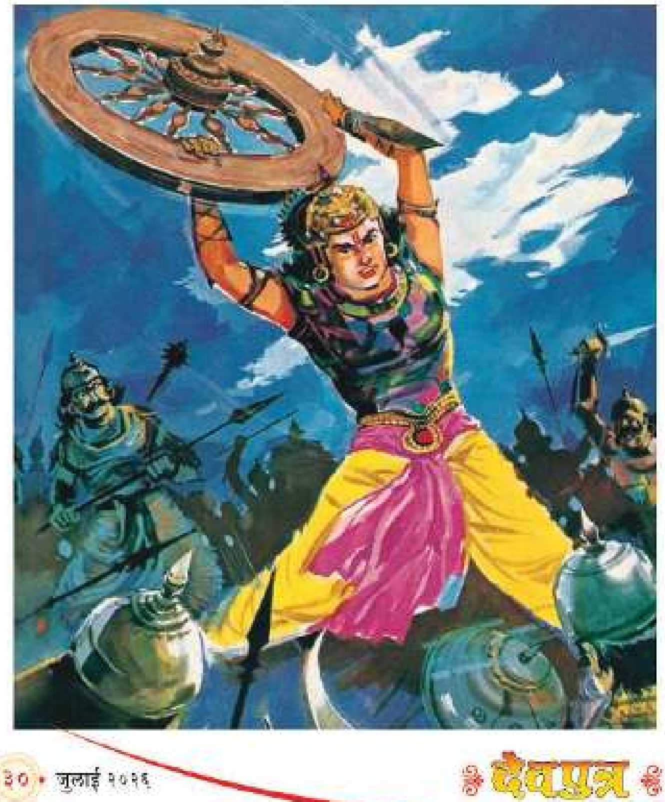

द्रोणाचार्य का वध

द्रोणाचार्य धनुर्विद्या के ज्ञाता थे। वे पांडवों की सेना का भीषण संहार कर रहे थे। उनके सामने पांडव पस्त हो गए। भीम ने एक हाथी को मार गिराया। उस हाथी का नाम अश्वत्थामा था। द्रोणाचार्य के पुत्र का नाम भी अश्वत्थामा था। युधिष्ठर ने घोषणा की– अश्वत्थामा मारा गया। पीछे धीरे से बोला– वह मनुष्य नहीं, हाथी था।

द्रोणाचार्य को लगा कि मेरा पुत्र अश्वथामा मारा गया है। वे दुखी हो गए। उन्होंने अपने हथियार त्याग दिए। वे युद्ध मैदान में निहत्थे बैठ गए। तभी धृष्टद्युम्न ने तलवार से उनका सिर काट दिया। द्रोणाचार्य की मृत्यु हो गयी। कौरवों का सेनापति मारा गया। बाद में दुर्योधन ने कर्ण को सेनापति बनाया। इस प्रकार १५ दिन बाद कर्ण कौरव सेना का सेनापति बना

– बाड़मेर
(राजस्थान)

लघु आलेख

भीगना बरसात में पर ध्यान भी रखना

– मोनिका जैन

प्यारे बच्चो!

बरखा रानी ने दस्तक दी है। तपता मौसम हो और बारिश आ जाए तो भीगने का मन तो हम बड़ों का भी करता है। और बचपन से जुड़ी हमारी बारिश की यादें तो इतनी सुंदर हैं कि तुम बच्चे बारिश में ना नहाओ तो हमें ही सूना–सूना लगेगा।

पर पहले और अब का समय कई रूपों में बदल भी तो गया है, इसलिए तुम बारिश में भीगते हो तो हम बड़ों को चिंता भी बहुत होती है।

तो क्यों ना हम मध्य का रास्ता निकाल लेते हैं। सबसे पहले तो किसी भी तरह की मस्ती के लिए रोज स्वस्थ दिनचर्या का पालन आवश्यक है। क्योंकि वही हमारे शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को बनाए रखती है। इसके बाद बारिश में तुम धमाचौकड़ी भी मचाना और बड़ों की सलाह और सहायता से कुछ बातों का ध्यान भी रखना, जिससे तुम्हारी तबीयत भी न बिगड़े और बड़ों की डाँट भी न खानी पड़े।

यदि पसीना आ रहा हो तो उसे सुखाकर ही बारिश में निकलना। नंगे पाँव या फिसलने वाले चप्पल और जूतों को पहनकर तुम्हें बारिश में नहीं जाना है।

बारिश में भीगने से पहले हलके वजन के ढीले और जल्दी सूखने वाले सूती कपड़े पहनना ठीक होगा। बारिश में खेलने के बाद भीगे कपड़ों में तुम्हें लम्बे समय तक नहीं रहना है और न ही पंखे या कूलर की ठंडी हवा के पास जाना है।

बारिश में मस्ती के बाद जल्द ही गर्म पानी में एंटीसेप्टिक लिक्विड मिलाकर नहा लेना है। शरीर और बालों को तौलिए से अच्छी तरह रगड़कर सुखा भी लेना है और फिर सरसों के तेल से शरीर की मालिश हो जाए तो क्या ही बात! यह सब तुम्हारे शरीर और मन को शांति देगा। नहाने के बाद कुछ गुनगुना पी लो तो बहुत अच्छा। गर्म–गर्म सूप कैसा रहेगा?

साफ–सुथरी, बिना फिसलन की, प्रदूषकों और ट्रेफिक से दूर सुरक्षित जगह पर तुम्हें नहाना है। बिजली के तारों से दूर रहना है। अगर किसी उद्यान में नहा रहे हो तो कीड़े–मकोड़े वाली जगह से दूर रहना है।

कहीं देर तक पानी भरा हो तो वहाँ सूक्ष्म जीवों से संक्रमण का खतरा रहता है, इसलिए वहाँ से भी दूर रहना उचित होगा।

इन सब सावधानियों के साथ शरीर पर बूँदों के स्पर्श, बारिश की आवाज, गीली मिट्टी की

सौंधी महक, पैरों पर गीली मिट्टी के स्पर्श और कागज की नावों को पानी में बहाने के मजे लो। मजे लो बारिश में खेलने और नाचने के भी।

बारिश का मौसम तुम्हें प्रकृति से जोड़ेगा और तुम्हारे लिए अनुभवों का नया संसार रचेगा। तुम्हारी खोज और रचनात्मकता को बढ़ाने का अवसर देगा। तुम्हारे शरीर और मन को मजबूत बनाएगा।

तुम चाहो तो बड़ों को अपने साथ सम्मिलित कर अपनी बारिशों को और भी खुशनुमा बना सकते हो। साथ ही बड़ों से प्रकृति और मौसम संबंधी अपनी जिज्ञासाओं का समाधान भी पा सकते हो।

बस हाँ, तेज तूफान, गर्जन, बिजली के कड़कने के समय, तबीयत ठीक ना होने पर या बारिश के अनुकूल न होने पर तुम्हें घर के भीतर ही रहना है।

इन बारिशों में अपना ध्यान रखना।

तुम्हारी दीदी।

– भीलवाड़ा (राजस्थान)

छः अँगुल मुस्कान

अध्यापक (छात्रों को समझाते हुए)– बच्चो! हमें अपने पिता के नाम से पहले श्री लगाना चाहिए तथा माता के नाम से पहले श्रीमती लगाना चाहिए।

अध्यापक (एक छात्र से)– पंकज, तुम अपने पिता के नाम में श्री लगाकर बताओ?

पंकज– मेरे पिता का नाम श्रीमती राम है।

अध्यापक (डाँटते हुए)– मैंने तुम्हें कितना समझाया कि पिता के नाम से पहले श्री लगाते हैं।

पंकज– जी, मेरे पिता का नाम मतिराम है। आप स्वयं उसमें श्री लगाकर बता दीजिए कि मैं कहाँ गलती कर रहा हूँ।

*****

अध्यापक– 'मुँह में पानी आना' का मुहावरा बनाओ।

बच्चा– जब मैंने नल से नीचे मुँह किया तो मेरे मुँह में पानी आ गया।

*****

अध्यापक– हिमालय पर्वत कहाँ है?

बच्चा– नहीं मालूम?

अध्यापक– बैंच पर खड़े हो जाओ।

बच्चा– बैंच पर खड़े होने से दिख जाएगा क्या?

इंद्र का परामर्श

– भूपसिंह 'भारती'

आषाढ़ का महीना बीत चुका था और सावन भी मुट्ठी के रेत की भाँति फिसलता जा रहा था, लेकिन आकाश अभी तक एकदम साफ था। दूर-दूर तक बादलों का नामोनिशान तक नहीं दिखाई दे रहा था। रामनगर में उदासी की चादर फैली हुई थी। राजा शुद्धोधन और उनका दरबार चिंताओं के सागर में डूबा हुआ था। दरबार में गहरा सन्नाटा पसरा हुआ था।

गहन चिंता में डूबे महामंत्री बोले– ''राजन्! यदि ऐसा ही चलता रहा तो निश्चित ही राज्य में अकाल पड़ जाएगा।'' यह सुनते ही वित्त मंत्री जी बोले– ''हे राजन्! यदि अकाल पड़ता है तो उस स्थिति में हम कहीं के नहीं रहेंगे। हमारा खजाना और अन्न भंडार तो पहले ही समाप्त होने की कगार पर है।'' वित्त मंत्री की यह बात सुनकर महाराज शुद्धोधन के माथे पर चिंता की लकीरें और गहरी होती चली गईं।

अचानक राजपुरोहित कुछ सोचते हुए बोले– ''राजन्! लगता है हमारी किसी भूल के कारण हम से इंद्रदेव क्रोधित हैं, इसीलिए तो राज्य में वर्षा नहीं हो रही!'' राजपुरोहित का तर्क सुनकर राजा बोले– ''राजपुरोहित जी! यदि ऐसा है तो आप ही इसका कोई उपाय ढूँढ़कर बताओ।'' राजपुरोहित गंभीर मुद्रा बनाते हुए बोला– ''राजन्! इसका तो केवल एक ही उपाय है कि हमें इंद्रदेव को प्रसन्न करने के लिए एक विशाल यज्ञ करना होगा।''

राजा बोले– ''जब आपके पास उपाय है तो फिर देर किस बात की है।'' इंद्रदेव को प्रसन्न करने के लिए यज्ञ की तैयारी की जाए। समस्या का समाधान पाकर राजा ने यज्ञ करने का तुरंत ही आदेश देते हुए कहा कि पूरे नगर में घोषणा करवा दी जाए कि कल राजभवन की यज्ञशाला में एक विशाल यज्ञ होने जा

रहा है। सभी नगरवासी यज्ञ में सम्मिलित हो।

अगले दिन सभी नगरवासी अपने-अपने घरों से घी और धन लेकर के राजभवन की यज्ञशाला में एकत्रित हो गए। राजपुरोहित ने यज्ञ प्रारंभ किया, मंत्रोच्चार होने लगे। दोपहार बाद अचानक यज्ञ अग्नि से इंद्रदेव प्रकट हुए और बोले- ''राजन्! मैं तुम्हारे यज्ञ से प्रसन्न हुआ। माँगो, वरदान माँगो।'' इंद्र भगवान को अपने सामने पाकर राजा की खुशी का ठिकाना नहीं रहा और राजा इंद्र देव को एकटक देखते रहे।

इंद्रदेव बोले- ''राजन्! क्या सोच रहे हो? वरदान मांगो, वरदान।'' इंद्रदेव की आवाज सुनकर राजा की तंद्रा भंग हुई और दुखी स्वर में बोले- ''हे भगवान! मेरे राज्य में कई महीनों से वर्षा नहीं हुई है, जिसके कारण राज्य में भयंकर अकाल की स्थिति बन गई। मेरी प्रजा दुखी है। हे देव, मुझे अपने लिए तो कुछ भी नहीं चाहिए, बस आप मेरे राज्य में वर्षा करवा दो।'' तथास्तु कहकर इंद्रदेव अंतर्ध्यान हो गए।

थोड़ी देर पश्चात ही आकाश बादलों से घिर गया, बादलों ने सूरज को ढँक लिया व अँधेरा सा छाने लगा। बादल धरती को चूम-चूमकर जाने लगे। बादलों को देखकर लोग प्रसन्नता से पागल हुए जा रहे थे, लेकिन यह क्या? धीरे-धीरे अँधेरा छटने लगा और देखते ही देखते सारे बादल बिना बरसे ही न जाने कहाँ अदृश्य हो गए। आसमान एकदम साफ हो गया और सूरज फिर से चमकने लगा। नगरवासी त्राहिमाम-त्राहिमाम करने लगे। यह देखकर के राजा शुद्धोधन ने पुन: यज्ञ आरंभ करने का आदेश दिया।

यज्ञ फिर प्रारंभ हुआ। फिर से मंत्रोच्चार दुगने उत्साह से गाए जाने लगे। इंद्रदेव पुन: प्रकट हुए और बोले- ''राजन्! अब और क्या चाहिए?''

राजा ने इंद्रदेव को सारी बातें बताते हुए कहा- ''हे इंद्रदेव! आपके बादल मेरे राज्य में आए तो अवश्य किन्तु बिना वर्षा किए ही वापस लौट गए।''

इंद्र बोले- ''हाँ राजन्! मुझे बादलों ने बताया था कि वो आपके राज्य में आए तो थे, किन्तु वर्षा नहीं कर पाए।''

राजा बोले- ''हे इंद्रदेव! आपके कहने के बाद भी उन्होंने मेरे राज्य में वर्षा क्यों नहीं की?'' यह सुनकर इंद्रदेव ने कहा कि आपके राज्य में तो पेड़ नाम मात्र ही हैं, जबकि बादलों को पेड़ बड़े प्रिय होते हैं, जहाँ अधिक पेड़ होते हैं वहाँ अधिक वर्षा करते हैं और जहाँ पेड़ नाम मात्र ही हो या नहीं होते वहाँ वर्षा भी नाममात्र या बिलकुल नहीं करते।

बादलों को वर्षा करने के लिए पेड़ ही आकर्षित करते हैं। मेरे आदेश पर बादल आपके राज्य में तो आए लेकिन पेड़ ना होने के कारण वह आपके राज्य में चाहकर भी नहीं बरस पाए और वापस लौट गए। यह सुनकर राजा उदासी से बोला- ''हे भगवान! अब हमें क्या करना चाहिए?'' इंद्रदेव ने सलाह दी कि राजन् आपको आगे राज्य में अधिक से अधिक पेड़ लगवाने चाहिए ताकि आपके राज्य में कभी भी वर्षा की कमी न हो। राजा बोला- ''हे इंद्रदेव! मैं आपको वचन देता हूँ कि अपने राज्य में मैं स्वयं भी पेड़ लगाऊँगा और अपनी प्रजा को पेड़ लगाने के लिए प्रेरित करूँगा।''

पूरे राज्य में राजा ने बड़े स्तर पर पौधा रोपण के आयोजन किए। इंद्रदेव ने भी कृपा की और बादलों को समझाया। इंद्र का आदेश मानकर कुछ ही दिनों बाद ही आकाश पुन: बादलों से घिर गया। बिजलियाँ कड़कने लगी। बादलों ने जोर की गड़गड़ाहट के साथ मूसलाधार बारिश की। नगरवासी आनंद से वर्षा में नहाने लगे।

- नारनौल
(हरियाणा)

विज्ञान व्यंग

–संकेत गोस्वामी

मोर की नासमझी

– सीताराम गुप्त

आकाश में घने बादल छाए हुए थे। रिमझिम-रिमझिम बूँदें पड़ रही थीं। ऐसे में जंगल में एक मोर आनंदित होकर नृत्य कर रहा था। उसके खूबसूरत पंख इंद्रधनुषी छटा बिखेर रहे थे। वहाँ से गुजरने वाला एक व्यक्ति रुक कर यह सुंदर दृश्य देखने लगा। तभी अचानक मोर की नजर उस व्यक्ति पर पड़ी।

उस व्यक्ति के हाथ में एक थैला था। मोर ने पूछा कि तुम कहाँ जा रहे हो और तुम्हारे हाथ में ये क्या है? व्यक्ति ने कहा कि मैं बाजार जा रहा हूँ और मेरे हाथ में जो थैला है, उसमें अनाज भरा हुआ है। मैं ये अनाज बेचकर एक सुंदर सा पंख खरीद कर लाऊँगा और उससे अपना घर सजाऊँगा। यह सुनकर मोर बोला- ''देखो, मेरे पंख भी बहुत सुंदर हैं। मुझे खाने की तलाश में दिनभर इधर-उधर भटकना पड़ता है। यदि तुम मुझे अनाज दे दो, तो मैं तुम्हें अपना खूबसूरत पंख दे दूँगा।''

व्यक्ति को ये सौदा पसंद आया। उसने अनाज मोर को दे दिया और पंख लेकर खुशी-खुशी अपने घर चला गया। अब तो वह व्यक्ति रोज-रोज ही अनाज लेकर मोर के पास आता और अनाज के बदले में पंख लेकर खुशी-खुशी अपने घर चला जाता। मोर भी बहुत खुश रहने लगा, क्योंकि अब उसे खाने की तलाश में दिनभर इधर-उधर नहीं भटकना पड़ता था। दिनभर अपनी चोंच से अनाज के दाने चुगता रहता और आराम से पड़ा रहता। लेकिन इससे धीरे-धीरे मोर के पंख कम होने लगे और एक दिन वो भी

आया, जब उसके सारे पंख ही समाप्त हो गए।

जब मोर के सारे पंख समाप्त हो गए, तो उस व्यक्ति ने अनाज लेकर आना भी छोड़ दिया। एक दिन मोर का भी सारा अनाज समाप्त हो गया, जो उस व्यक्ति द्वारा दिया गया था। अब मोर को भूख लगी तो उसने फैसला किया, कि कहीं आसपास जाकर दाना-दुनका जुटाता हूँ।

मोर ने उड़ने का प्रयास किया, लेकिन वो तो उड़ ही नहीं पा रहा था। उड़े भी तो कैसे ? अब उसके पास एक पंख भी तो नहीं बचा था। उसने अपने शरीर पर एक नजर डाली, तो उसने पाया कि पंखों के बिना वह कितना बदसूरत लग रहा है। एक ही जगह पड़े-पड़े और आराम से सारे दिन खाते रहने की वजह से उसका शरीर भी भारी और थुलथुल हो गया था।

मोर ने आसानी से घर बैठे दाने प्राप्त करने के लालच में अपनी सुंदरता ही नहीं, अपनी उड़ने की क्षमता को भी बेच दिया था और साथ ही अपनी चंचलता व कर्मशीलता से भी हाथ धो बैठा था।

वह प्राय: भूखा-प्यासा पड़ा रहता। उसका नाचना भी बंद हो गया था, क्योंकि न तो उसके पास पंख ही थे और न नाचने की शक्ति ही उसमें शेष बची थी। अपनी इस स्थिति के कारण वह बहुत दुखी रहने लगा।

अपमान, अभाव व अशक्तता के काणर जल्दी ही वह मौत के मुख में समा गया। उसके साथ ऐसा क्यों हुआ ? उसके साथ ऐसा इसलिए हुआ, क्योंकि उसने कर्म करना छोड़ दिया था।

मोर की सुंदरता व उसके जीवन का आधार उसके पंखों व उसके नृत्य में है, आरामपरस्ती में नहीं। मोर ही नहीं, हर मनुष्य व हर प्राणी के लिए कर्म करना अनिवार्य है।

जब भी हम अपना स्वाभाविक कर्म व कर्त्तव्य का पालन करना छोड़ देते हैं, हमारी दुर्गति ही होती है। हम इतने बड़े व्यापारी न बनें, कि अपना सौंदर्य, अपनी कला, अपनी योग्यता अथवा अपनी नैतिकता ही किसी लालच के वशीभूत होकर खो बैठें।

कर्म व कलाओं के श्रेष्ठ प्रदर्शन द्वारा हम न केवल आसानी से अपनी आजीविका ही कमा सकते हैं अपितु स्वस्थ और रोगमुक्त भी बने रहते हैं। सुविधाएँ नहीं, जीवन का वास्तविक आधार है कर्म।

– दिल्ली

बाल जगत

पहेलियाँ

– सुनील कुमार माथुर

१) बिना धोए सब खाते हैं,
खाकर फिर पछताते हैं
बताओ ऐसी चीज है क्या
कहते हुए शर्माते हैं।

२) हूँ दुनियाँ में सबसे ऊँचा।
फिर भी घमण्ड नहीं करता।।
मेरा नाम हर कोई जाने।
बर्फ से झोली भरता हूँ।।

३) एक मुसाफिर ऐसा देखा।
चलते-चलते थक गया।।
निकाली छुरी काटी गर्दन।
फिर भी वह चलने लग गया।।

४) अग्नि परीक्षा देकर आया।
गर्मी में शीतल जल लाया।।
कंधे पर या सिर पर बैठूँ।
हरदम सेवा, कभी न लेटूँ।।

५) आना जाना उसको भाये।
जिस घर जाये लकड़ी खाये।।

– मेड़ता सिटी (राजस्थान)

उत्तर – १) धोखा। २) हिमालय। ३) मोमबत्ती। ४) मटका। ५) आरी।

जानवरों के मजेदार तथ्य

-देवांशु वत्स

मैं हूँ 'कछुआ'! सर्वाधिक जीने वाला। समुद्र में आठ हजार मील दूर जा कर भी आसानी से वहीं पहुँच जाता हूँ जहाँ से चलता हूँ!

मैं हूँ 'तोता'! तुम्हें यह जान कर हैरानी होगी कि मै जो कुछ बोल -ता हूँ वो खुद नहीं समझ पाता। मै तो बस तुम्हारी नकल करता हूँ!!

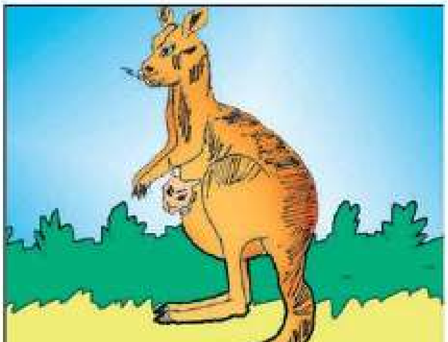

मैं हूँ 'कंगारू'! ऑस्ट्रेलिया से हूं। कद सात फुट और वजन दो सौ पौंड होने के बावजूद भी पच्चीस-तीस फुट तक उछल सकता हूँ!

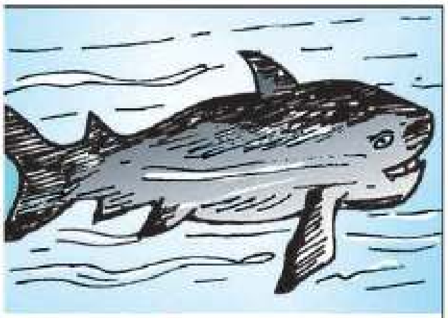

मैं हूँ 'शार्क'! इस संसार में पाई जाने वाली एकमात्र ऐसी मछली हूँ जो अपनी दोनों आँखें बखूबी झपका सकती है!

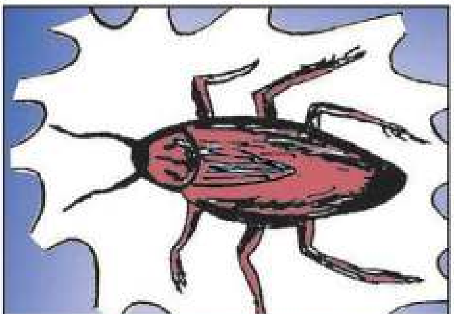

मैं हूँ 'तिलचट्टा'! इस दुनिया का सबसे पुराना जीव! एक मात्र ऐसा प्राणी जो जैसा सृष्टि के प्रारंभ में था, आज भी वैसा ही है!

मैं हूँ 'अश्व यानी घोड़ा'! शक्ति की इकाई होती है अश्वशक्ति। अश्वशक्ति तुम्हारी कार्य क्षमता से 20–25 गुणी ज्यादा होती है!

मैं हूँ 'मगरमच्छ'! पानी का जीव हूँ। मुझमें और तुममें एक समानता तो यह है कि तुम्हारी तरह मेरे भी बत्तीस दाँत होते हैं!

मैं हूँ 'शुतुरमुर्ग'! मुझमें खास यह है कि मेरा अंडा मेरे शरीर से कही अधिक वजनदार होता है और आँखें दिमाग से बड़ी!

मैं हूँ 'मेंढक'! ऊपर बने कार्टून में जो तुम देख रहे हो मैं उस तरह पानी नहीं पीता। वास्तव में मैं अपनी त्वचा से पानी पीता हूँ!

कहानी

अमला और विमला की दादी

– नीलम राकेश

अमला और विमला दोनों सगी बहनें थीं। वैसे तो दोनों के बीच में दो वर्ष का अंतर था। अमाया दस वर्ष की थी और विमला आठ वर्ष की। दोनों में खूब पटती थी। हर खेल दोनों एक साथ खेलती थीं पर जितना खेलती थीं उतना ही लड़ती भी थीं। लेकिन उनकी लड़ाई पत्ते पर ओस की बूँद की तरह थी। कब हुई और कब समाप्त। फिर दोनों खेलती दिखाई देती थीं। इसलिए माँ कभी भी उनकी लड़ाई के बीच में नहीं आती थीं। वे स्वयं ही लड़तीं और स्वयं ही दोस्ती करती थीं।

आजकल दोनों को बरामदे में खेलना पड़ता था। क्योंकि उनके खेलने के कमरे में आजकल गाँव से आई दादी रहती थीं। इस कारण से उन दोनों को थोड़ी असुविधा होती थी पर उनसे अधिक असुविधा उनके यहाँ काम करने वाली रमा काकी और राधा मौसी को होती थी। पता नहीं क्यों दोनों आजकल बहुत चिढ़ी-चिढ़ी सी रहती थीं। और जब-तब सफाई के बहाने उन दोनों बहनों को इनसे डाँट पड़ जाती थी।

जब भी वे पूछतीं कि हमें क्यों डाँट रही हैं तो जवाब मिलता ''यहाँ बरामदे में क्यों सारे खिलौने फैला रखे हैं?'' अपने कमरे में जाकर खेला करो।''

''वहाँ तो दादी हैं।''

''तो हम क्या करें? तुम लोग पूरा बरामदा फैला देती हो।''

घर के बाहर काम करने वाले नौकर चाकर भी थोड़ा सहमें रहने लगे थे। उन सब पर तो दोनों काकी, मौसी की ही हुकूमत चलती थी। विशेष रूप से रमा काकी की। माँ तो बेचारी सीधी-साधी-सी किसी को कुछ कहती नहीं थी। सभी लोग अपने-अपने काम को बहुत ध्यान से जल्दी-जल्दी पूरा करने लगे थे। सभी को डाँट पढ़ने का डर था। घर में एक अजीब-सा वातावरण पैदा हो गया था। विमला और अमला कुछ समझ नहीं पाते थे।

माँ पहले भी कई बार चुकी थीं। आज फिर से कहा, ''तुम दोनों जाकर दादी के साथ खेला करो ना।''

''अरे, हम दादी के साथ क्या खेलेंगे?'' आश्चर्य से अमला ने पूछा।

''दादी तो हर समय कोई किताब पढ़ती रहती है।'' विमला ने उसमें जोड़ा।

''जब तुम दादी के पास जाओगे, बैठोगे तभी तो तुम्हें पता चलेगा कि वह क्या खेल सकती हैं।'' खीजकर माँ बोलीं।

''भाभी, ड्राइवर ने गाड़ी लगा दी है। बिटिया लोगों को कहीं जाना है क्या?'' उसी समय रमा ने आकर पूछा।

''हाँ हमारी दोस्त का जन्मदिन पार्टी है।'' चहक कर विमला बोली।

बात आई गई हो गई। माँ जल्दी-जल्दी दोनों को तैयार करने में लग गईं। रमा भी सहायता करने लगी। कुछ ही देर में दोनों बहने अपनी दोस्त के यहाँ चली गईं।

थकी हारी सी माँ एक कुर्सी पर बैठ गईं। और बोलीं, ''समझ में नहीं आता ये बच्चे बिल्कुल दादी के पास नहीं जाते क्या करूँ?''

''भाभी बुरा न माने तो एक बात कहूँ?''

''हाँ, बोलो न रमा।''

''आज क्यों नहीं माताजी को गाँव वापस भेज देतीं?'' रमा ने अपने मन का सुझाव दिया।

''कैसी बात कर रही हो रमा? बाबू जी थे तो बात अलग थी। अब मांजी गाँव में अकेले कैसे रह सकती हैं?'' आश्चर्य से माँ की आँख फैल गईं थीं।

''देखिए न भाभी, आप समझिए माँजी को गाँव

में रहने की आदत है। यहाँ बिटिया लोगों को दिक्कत हो रही है। उनका खेलने का कमरा छिन गया है। हम लोगों का भी कितना काम बढ़ गया है।'' रमा शब्दों में मिठास घोल कर बोली।

कभी गुस्सा न करने वाली माँ को बहुत गुस्सा आ रहा था। एक–एक शब्द पर जोर देकर बोलीं, ''रमा! तुम्हें लगता है तुम्हारा काम बहुत बढ़ गया है तो तुम काम छोड़ कर जा सकती हो। रह गई मेरी बेटियों की बात तो उन्हें दादी के साथ घुलना–मिलना सीखना होगा। और दादी यहीं रहेंगी। बच्चे तो कच्ची मिट्टी की लोई होते हैं। उन्हें समझाने का मैं कोई ना कोई रास्ता तो ढूँढ़ ही लूँगी।'' कहते हुए माँ अपने कमरे के अंदर चली गईं। हड़बड़ाई सी रमा माँ को अंदर जाते देखती रही।

अमला और विमला पार्टी में पहुँचकर बहुत खुश थीं। फ्रिल वाली फ्रॉक में दोनों बहुत खूबसूरत लग रही थीं। तरह–तरह के खेल हो रहे थे। बहुत मजा आ रहा था। अचानक अमला का ध्यान गया कि इस सारे खेल को करवाने में रुचि की माँ की सहायता एक बूढ़ी नानी कर रही थीं। उसने पहले उन्हें कभी नहीं देखा था। वह रुचि के पास जाकर बोली, ''ये नानी कौन है? इनको पहले तो कभी नहीं देखा।''

गर्व के साथ रुचि बोली, ''ये मेरी नानी हैं। आजकल आई हुई हैं। जानती हो तो तरह–तरह के खेल अभी हम लोग खेल रहे थे, वो नानी ने ही करवाए हैं।''

''सच में? नानी को इतने अच्छे खेल आते हैं।'' आश्चर्य से अमला ने पूछा।

''हाँ, बहुत सारे और पता है नानी रोज रात में हमें कहानी भी सुनाती हैं।'' रुचि ने चहकते हुए बताया।

''सच में?'' अमला को विश्वास ही नहीं हो रहा था।

''क्या सच में, सच में लगा रखा है? चलो खेलें।'' और दोनों दोस्त वापस खेल खेलने चली गईं।

अब अमला का मन पार्टी में नहीं लग रहा था। उसे घर जाने की जल्दी थी। मिठाई बँटी और जैसे ही खाना समाप्त हुआ वह झट से विमला के साथ आकर कार में बैठ गई। घर आते ही वह दौड़ते हुए दादी के कमरे में गई। उसके पीछे–पीछे माँ और विमला भी गए।

''दादी! दादी!'' पुकारते हुए अमला दादी के कमरे में घुसी।

आश्चर्य से दादी ने पोती की ओर देखा और अपनी किताब को बंद कर एक किनारे रख दिया।

''हाँ, बिट्टू क्या बात है ? तुम ऐसे भाग-भाग कर क्यों आई हो ?''

''दादी, पहले आप मेरी बात का जवाब दीजिए।'' कमर पर हाथ रखकर अमला बोली।

''हाँ, पूछो।'' दादी मुसकराईं।

''आपको कहानी आती है ?''

''हाँ, आती है। क्यों, कहानी तो सबको आती है।'' सिर हिलाते हुए दादी बोलीं।

''सच में आपको कहानी आती है?'' आश्चर्य के साथ विमला ने पूछा।

''हाँ भाई आती तो है। इसमें आश्चर्य की क्या बात है ?'' अब दादी ने आश्चर्य के साथ पूछा।

''तो फिर अभी तक आपने हम दोनों को कहानी क्यों नहीं सुनाई ?'' अमला ने पूछा।

''हाँ भाई यह तो गलती हो गई। चलो अब सुनाएँगे। जब तुम्हारे पास समय हो तब मेरे पास आ जाना।'' दादी ने गलती मानते हुए प्रस्ताव रखा।

''कहानी नहीं दादी, बहुत सारी कहानी।'' अमला बोली।

''हाँ दादी, बहुत-बहुत सारी कहानी।'' विमला ने जोड़ा।

''हाँ भाई, बहुत, बहुत, बहुत सारी कहानी।'' हँसते हुए दादी बोलीं।

''तो फिर आप आज से ही शुरू करिए।'' अमला बोली।

''ठीक है। तुम दोनों कपड़े बदल कर मेरे पास आ जाओ। मैं आज तुमको एक अच्छी-सी कहानी सुनाती हूँ।'' दादी ने सहमति जताई।

खुशी-खुशी दोनों बच्चे कपड़े बदलने के लिए अपने कमरे की ओर भागे। दादी और माँ ने एक-दूसरे की ओर देखा दोनों की आँखें मुस्कुरा रही थीं।

कहानी सुनते-सुनाते दादी और पोती मिलकर गुड्डा-गुडिया खेलने लगे थे। बच्चों का खेलने का कमरा वापस मिल गया था। दादी अब बच्चों के कमरे में रहने लगी थीं। दादी के आशीर्वाद तले घर अब खुशियों से खिलखिलाने लगा था।

- लखनऊ (उ. प्र.)

गुनी नहीं तो गुणी नहीं

दादी नानी की गोदी में बैठ कहानी सुनी नहीं
तो समझो बचपन बगिया की फुलवारी ही चुनी नहीं
सीख समन्दर, ममता अन्दर, कौतुक है रोमांच भरी
जीवन भर ये साथ निभाए गुनी नहीं, तो गुणी नहीं

- गोपाल माहेश्वरी

क्रांतिकारी वीर नौजवान : ऊधमसिंह

– ऋषि मोहन श्रीवास्तव

जलियाँवाला बाग के नरसंहार में अँग्रेजों ने सैकड़ों भारतवासियों का रक्त बहाया था। वैशाखी के महान पर्व को मनाने के लिए उस समय बाग में, लगभग २० हजार लोग उपस्थित थे।

अचानक से अँग्रेज सिपाहियों ने निहत्थे– भारतीयों को अपनी राइफलों से भून डाला था। कितना अमानवीय और घृणित कृत्य था– अँग्रेजों का। जलियाँवाला कांड के तीन प्रमुख खलनायक थे– पंजाब का लैफ्टिनेंट गर्वनर सर माइकेल ओ. डायर भारत में जन्मा सैनिक अधिकारी बिग्रेडियर जनरल ई. एच. डायर और भारत का सेक्रेटरी ऑफ स्टेट लार्ड जैटलैंड।

१९ वर्षीय ऊधमसिंह वह नौजवान था, जिसने अँग्रेजों के जुल्म को अपनी आँखों से देखा। ऊधमसिंह ने उसी समय प्रतिज्ञा की वह इन तीनों खलनायकों से उनके कृत्य का बदला लेगा। अपने मन में प्रतिशोध की ज्वाला लिए यह नौजवान निरन्तर प्रयास कर रहा था कि कैसे वह इन तीनों को अपनी रिवाल्वर का निशाना बनाए तभी जनरल डायर की मौत हो गई।

दो लोग, सर माइकेल ओ. डायर और लार्ड जेटलैंड जिन्दा थे। ऊधमसिंह बराबर इनका पीछा करते रहे। वे बराबर अपनी रिवाल्वर की सफाई करते और हमेशा उसे अपने पास रखते और अंत में वह दिन ३१ मार्च वर्ष १९४० आ गया। जब सरमाइकेल ओ. डायर और जेटलैंड को एक साथ एक गोष्ठी में जाना था। ऊधमसिंह भी मंच के पास जाकर बैठ गए। अवसर मिलते ही ऊधमसिंह ने माइकेल पर अपना निशाना साध डाला। वह वहीं गिर पड़ा। जैटलैंड केवल घायल होकर पड़ा था।

लोगों ने दौड़कर ऊधमसिंह को गिरफ्तार कर लिया। मजिस्ट्रेट ने जब मुकदमे के समय इनका नाम पूछा तो उन्होंने कहा– ''मेरा नाम ऊधमसिंह नहीं मेरा नाम राम मोहम्मद सिंह आजाद है। यानि राम हिन्दू मोहम्मद मुसलमान सिंह– सिख और आजाद का अर्थ है– भारत की आजादी।

अंत में मजिस्ट्रेट ने ऊधमसिंह को मृत्यु दण्ड दे डाला। पेंटोविले जेल में इस वीर क्रांतिकारी को ३१ जुलाई वर्ष १९४० को फाँसी दे दी गई।

– ग्वालियर (म. प्र.)

सुभाषित

नहीं देश के लिए ज्ञान जो
नहीं देश के लिए जो धन।
नहीं देश के लिए जो बल है
व्यर्थ ज्ञान धन बल यौवन।

दोस्तों का दोस्त
चित्रकथा: देवांशु वत्स
कक्षा में...
हैप्पी फ्रेंडशिप डे मोंटी!
सेम टू यू टिक्कू!
हैप्पी फ्रेंडशिप डे नताशा!
थैंक्यू सोनू। सेम टू यू!
देखो, राम भी आ रहा है।
हाँ।
राम, इस बार फ्रेंडशिप डे पर क्या अलग करोगे?
तुम भी टॉफियाँ लाए होंगे।
हाँ, और साथ में इस बार मैं अपने दोस्तों के लिए दोस्त भी लाया हूं!
दोस्तों के लिए दोस्त! मतलब?
मतलब मैं किताबे लाया हूँ तुम सब को देने के लिए।
मेरे दादाजी कहते हैं कि किताबें हमारी सबसे अच्छी-सच्ची दोस्त होती हैं!
हाँ, सचमुच में राम!
हैप्पी फ्रेंडशिप डे!
हैप्पी फ्रेंडशिप डे राम!

छतरी का कमाल

– संदीप पांडे 'शिष्य'

एक समय की बात है। नदी के किनारे बसा हुआ एक बहुत सुंदर गाँव था अमनपुर। चारों ओर लहलहाते खेत, मीठे और स्वादिष्ट फलों से लदे पेड़ इस गाँव की खुशहाली के गवाह थे।

प्रकृति का बड़ा ही सुंदर दृश्य यहाँ देखने को मिलता। समरू और उसकी पत्नी भी इसी गाँव में रहते थे। दोनों बहुत मेहनती और ईमानदार। अमनपुर गाँव जहाँ अपनी सुंदरता के लिए आसपास के अनेक गाँव तक जाना जाता, उतना ही समरू के बनाए सुंदर–सुंदर रंग–बिरंगे छातों के लिए भी। उनके बनाए छाते अमनपुर और आसपास के कई गाँवों के बच्चे सर पर ओढते धूप से बारिश से बचते।

आसपास जब भी कहीं मेला लगता समरू को उसमें अवश्य ही बुलाया जाता और उसके ये, रंग–बिरंगे छाते पूरे मेले में आकर्षण का केंद्र होते। जो भी एक बार उनके बनाए छाते लेता वह हर बार उन्हीं की माँग करता। बच्चों की टोली इन रंग–बिरंगे छातों को अपने साथ रखती अपने कमरे में सजाती और इसे अपनी प्रिय चीज मानकर खुशी से झूम उठती।

समरू और उसकी पत्नी इन बच्चों के चेहरे की खुशी देखकर अपने सारे गम भूल जाते और फिर से नई ऊर्जा और जोश से अपने काम में लग जाते। इस काम से उन्होंने काफी धन भी अर्जित कर लिया। मगर इसका उन्हें जरा भी अभिमान नहीं रहता।

कितने मौसम आए, चले गए, मगर समरू का यह काम अपनी गति से चलता रहा। समरू के छाते पसंद करने वालों की गिनती इस गाँव में दिन-प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही है। उसकी यह ख्याति गाँव में कुछ लोगों की ईर्ष्या का कारण भी बनने लगी। जैसे उन्हीं के पड़ोस में रहने वाले दो बहुत आलसी युवक जिनके नाम थे नाउठ और नाचल, वह दोनों ही उनसे ईर्ष्या करते। दोनों न तो किसी काम के लिए उठते न किसी काम के लिए चलकर मेहनत करते यानि बहुत ही आलसी थे।

बिना काम के धन कमाने का सोचते। गाँव में सभी लोग उनकी करतूतों से परेशान थे। इस कारण उन्हें गाँव में कोई काम नहीं देता, जिससे उन्हें अब चोरी करने की आदत भी पड़ गई थी। एक दिन वो दोनों मौका पाकर समरू के दो बहुत रंगीन छाते चुरा लाये और दूसरे गाँव से लगे शहर के एक होटल में बेच आये। अब, इधर समरू ने पहले तो अपने दोनों छाते खूब खोजे फिर सोचा कि शायद चूहे आये, होंगे या दरवाजा खुला है तो कुत्ते आ गये होंगे। कोई चुराकर ले गया ये तो उसको भरोसा ही न था।

समरू ने अब ताला, लगाकर अपना छाते वाला कमरा बंद कर दिया। उधर, अब होटल वाले ने वो रंग-बिरंगे सुंदर छाते होटल के दरवाजे पर सजाकर लगा दिए। एक दिन समरू के पडोसी को किसी काम से शहर जाना था, उस ने उस होटल में वह छाते देखे तो होटल वाले से पूछ लिया कि आपने यह कहाँ से खरीदे। वह बोला कि कुछ दिन पहले दो युवक बेच गए पर उसके बाद आए नहीं, पर मुझे और भी छाते खरीदने हैं।

यह सुनकर पडोसी ने समरू का पूरा नाम पता ठिकाना दे दिया। होटल वाला एक दिन गांव में आया और समरू से मिला। वह, समरू और उसकी मेहनती पत्नी को देखकर दंग रह गया। कितने मेहनती और कितने सरल पति पत्नी।

वह, होटल मालिक बहुत सारे रूपये देकर कुछ छाते खरीद कर ले गया। अब समरू और भी अधिक लोकप्रिय हो गया जबकि नाउठ और नाचल अभी तक मेहनत की जगह छोटी-मोटी चोरी करके अपना जीवन बर्बाद कर रहे थे। एक दिन समरू को गाँव के जमीदार ने सौ छाते बनाने का काम दिया और सौ सोने के सिक्के दिए। यह खबर गाँव में आग की तरह फैल गई। अब, नाउठ और नाचल यही सोचते रहे कि कैसे समरू के सिक्के चोरी कर ले। एक रात दोनों ने चुपचाप दबे पाँव समरू के घर में प्रवेश किया।

दिनभर के थके समरू और पत्नी गहरी नींद में सो रहे थे। अचानक कुत्ते भौके और किसी के चीखने की आवाज आई। समरू चट से जाग गया। उसने देखा जमीदार के आदमी नाउठ और नाचल की गर्दन पकड़कर ले जा रहे है। ''हमें छोड़ दो। हम बेकसूर है।'' वो रो रहे थे। हम छिपकर रात को गाँव का चक्कर लगा रहे थे और यह दोनों चोरी कर रहे थे।

''चलो जमीदार के पास अब पता चलेगा।'' कहकर दोनों को जमीदार के, पास पेश किया गया। ये दोनों तो गाँव का नाम खराब कर रहे हैं। ऐसा करो इनको दो समय दाल रोटी खाने को दो व खेत में काम कराओ। फिर देखो इनका आलस भागता है कि नहीं।

दो दिन खेत में काम करके दोनों को अकल आ गई। दोनों ने अब मेहनत करके जीने का संकल्प लिया। यह पता लगा तो जमीदार ने उन दोनों को मजदूरी का रुपया दिया और अपने खेतों में हमेशा के लिए काम पर रख लिया। अब समरू और भी अधिक लोकप्रिय हो गया। उसके छातों के कारण दो आलसी सुधर गये।

- कोटडा (राजस्थान)

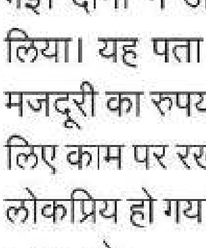

क्या कर सकते धूप और पानी।
साथ रहे जब छतरी रानी।।

पुस्तक परिचय

मेरी पसंद की बाल कहानियाँ

डॉ. नागेश पाण्डेय 'संजय' बाल साहित्य की लब्ध प्रतिष्ठित विभूति है। प्रस्तुत पुस्तक डॉ. शकुंतला कालरा के द्वारा संपादित संजय जी की ३१ बाल कहानियों का अनुपम संकलन है।

प्रकाशक– लिटिल बर्ड पब्लिकेशन्स ४६३७/२० शाप नं. एफ–५, प्रथम तल, हरिभवन अंसारी रोड, दरियागंज नई दिल्ली–११०००२

मूल्य– २५०/–

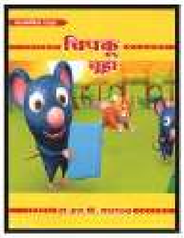

चिपकू चूहा

डॉ. आर. पी. सारस्वत बाल गीतों–कविताओं के समर्थ हस्ताक्षर है। प्रस्तुत पुस्तक उनकी पचपन मनभावन बाल कविताओं का संकलन है, जो बचपन के मन की फुलवारी को खिला देगा।

प्रकाशक– नीरजा स्मृति, बाल साहित्य न्यास एस–१६७–१६८ पैरामाउण्ट ट्यूलिप, दिल्ली रोड, सहारनपुर–२४७००१ (उ. प्र.)

मूल्य– १५०/–

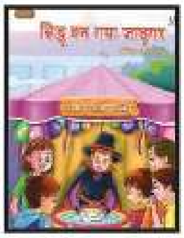

सिद्धू बन गया जादूगर

सुप्रसिद्ध बाल साहित्यकार रोचिका अरूण शर्मा की लेखनी ने आपके लिए इस संकलन में प्रस्तुत की है १५ रोचक बाल कहानियाँ, कुछ अपने ही ढंग से।

प्रकाशक– ज्ञानमुद्रा पब्लिकेशन बी–२०१, गीत स्काय वेली, मित्तल कॉलेज रोड, नवी बाग, भोपाल–४६२०३८ (म. प्र.)

मूल्य– ८०/–

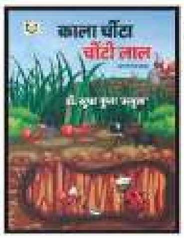

काला चींटा चींटी लाल

वरिष्ठ बाल साहित्यसर्जक डॉ. सुधा गुप्ता 'अमृता' के लेखनी सदैव बच्चों के लिए नया रचती है। प्रस्तुत पुस्तक में आपने २३ मनोहर बाल कविताएँ संजोयी है। इनका आनंद लीजिए।

प्रकाशन– इण्डिया नेट बुक्स प्रा. लि., सी–१२२, सेक्टर–१९, नोएडा–२०१३०१, गौतम बुद्ध नगर (एनसीआर) दिल्ली

मूल्य– १००/–

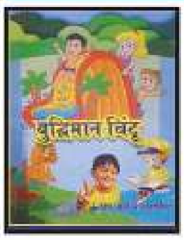

बुद्धिमान चिन्टू

यह डॉ. अर्चना प्रकाश की ग्यारह बाल कहानियों का चित्ताकर्षक संकलन है। जिसकी कहानियाँ बालमन में इन्द्रधनुष रचती हैं।

प्रकाशन–शतरंग प्रकाशन, एस–४३, विकास दीप बिल्डिंग, द्वितीयतल स्टेशन रोड, लखनऊ–२२६००१ (उ. प्र.)

मूल्य– १००/–

क्या गायब?

दूसरे चित्र में पहले की नकल करते समय बनाने से क्या रह गया है? बूझो.

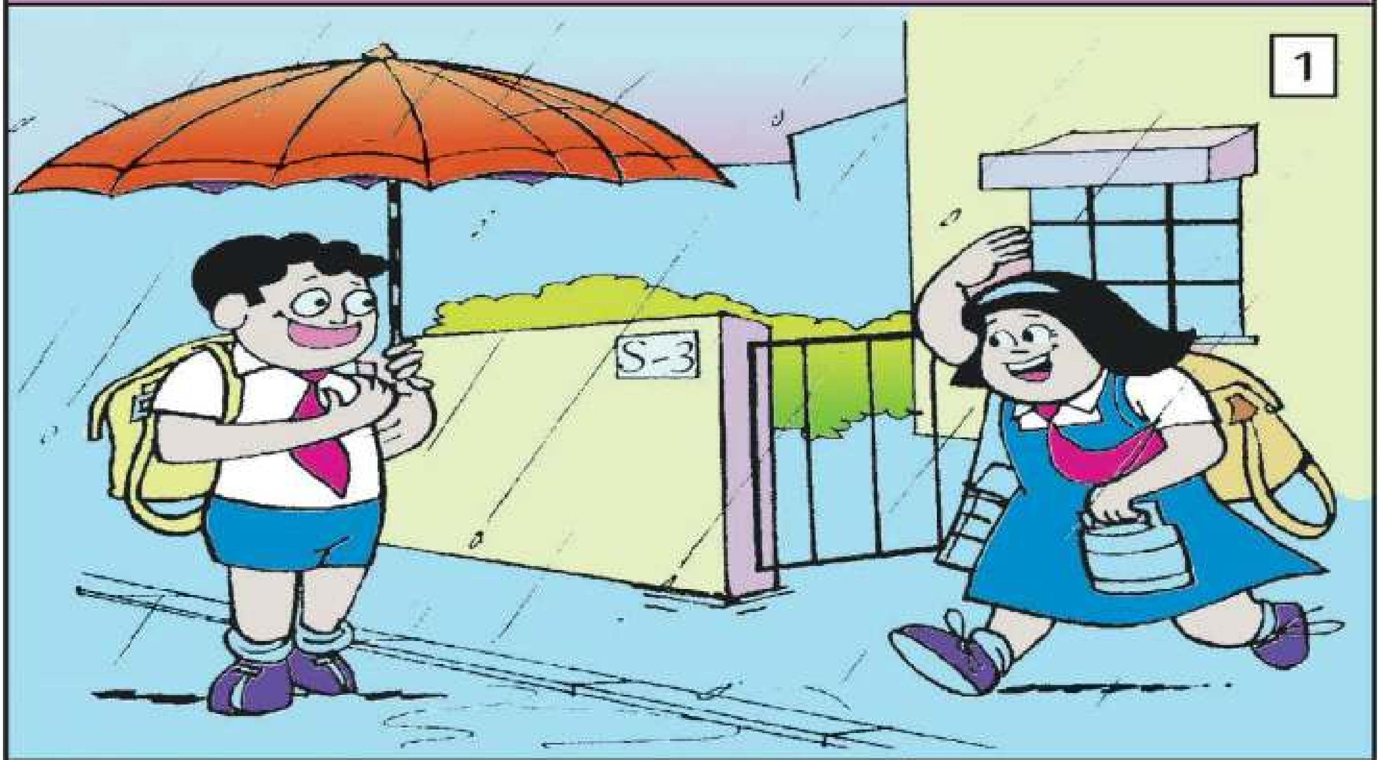

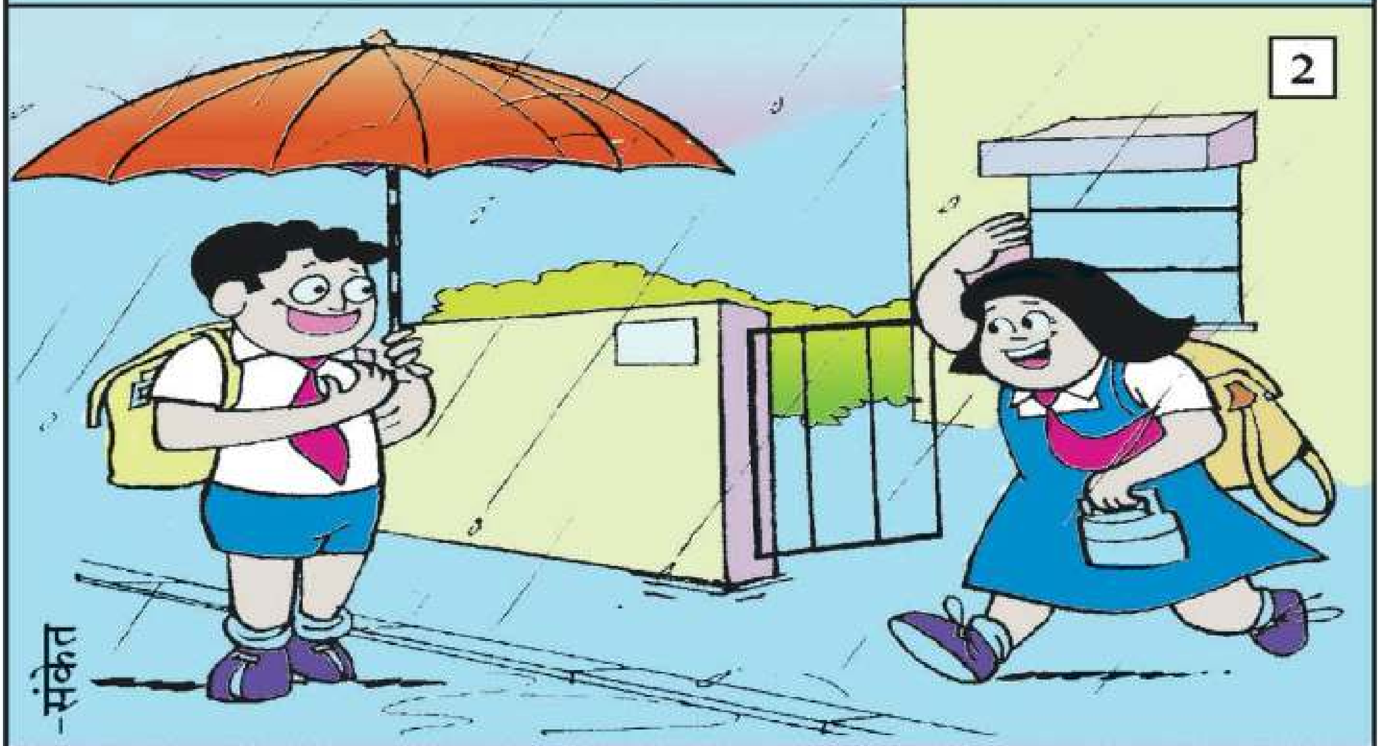

दूसरे चित्र में नहीं है–1.छतरी की पट्टी 2.पीछे का मकान 3.खिड़की के सरिए 4.लड़के के बैग का पट्टा 5.मकान नम्बर 6.पानी की बोतल 7.लड़की का हेयर बैंड 8.उसके टिफिन का निचला हिस्सा

अटल सिद्धांतों के धनी : श्री अष्ठाना

इन्दौर। श्री. कृष्णकुमार अष्ठाना के जन्मदिवस के अवसर पर श्री. मध्यभारत हिंदी साहित्य समिति सभागार में एक भावपूर्ण स्मरणांजलि आयोजित की गई कार्यक्रम में श्री. अष्ठानाजी के जीवन, त्याग, समर्पण संघ कार्य एवं समाज सेवा पर प्रकाश डाला गया।

कार्यक्रम में प्रमुख अतिथियों के रूप में स्वदेश भोपाल के संपादक राजेन्द्र शर्मा, लोक प्रशासन मंत्री (म. प्र.) कैलाश विजयवर्गीय तथा मालवा प्रांत संघचालक डॉ. प्रकाश शास्त्री विशेष रूप से उपस्थित रहे।

राजेन्द्र शर्मा ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि श्री. अष्ठानाजी सबसे कम उम्र में प्राचार्य बने। बाल स्वयंसेवक के रूप में संघ कार्य उनके जीवन में प्रारंभ से ही समाहित था।

आपातकाल के दौरान भी उन्होंने सिद्धांतों से कभी समझौता नहीं किया। परिवार की उपेक्षा करते हुए राष्ट्रहित में पूर्ण समर्पण किया।

लोक प्रशासन मंत्री कैलाश विजयवर्गीय ने कहा कि श्री. अष्ठानाजी एक आदर्श व्यक्तित्व थे, उनका जीवन अनुकरणीय है। उन्होंने देवपुत्र पत्रिका को आर्थिक संकटों के बावजूद बाल संस्कार एवं नई पीढ़ी में संस्कार निर्माण का सबसे बड़ा माध्यम बनाया। उनके त्याग, बलिदान और मार्गदर्शन को हम सदैव गौरव के साथ याद रखेंगे।

मालवा प्रांत संघचालक डॉ. प्रकाश शास्त्री ने कहा कि बाल कार्य से प्रारंभ करके श्री. अष्ठानाजी ने अपने कृतित्व से समाज पर अमिट छाप छोड़ी। वे ओजस्वी वक्ता थे और बाल शाखाओं के प्रति विशेष लगाव रखते थे। उन्होंने देवपुत्र को संकट से बचाकर आगे बढ़ाया।

मध्यप्रदेश साहित्य अकादमी के निदेशक सहित अनेक गरिमामय दायित्व सम्हाल रहे डॉ. विकास दवे ने श्री. अष्ठानाजी को स्मरण करते हुए कहा कि वे स्वार्थ रहित होकर समाज नदी में स्वयं को विलीन करने वाले व्यक्तित्व थे।

श्री जी. डी. अग्रवाल, प्रो. बी. पी. मिश्रा एवं श्री विनोद गुप्ता ने अतिथियों का स्वागत किया एवं कार्यक्रम का आभार श्री विवेक अष्ठाना ने माना। संचालन प्रो. सुब्रतो गुहा ने किया।

इस तरह बनाओ

कूदता मेंढक

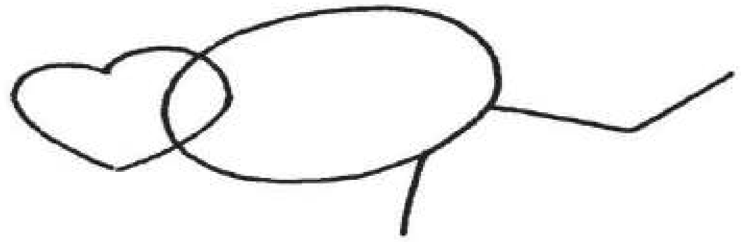

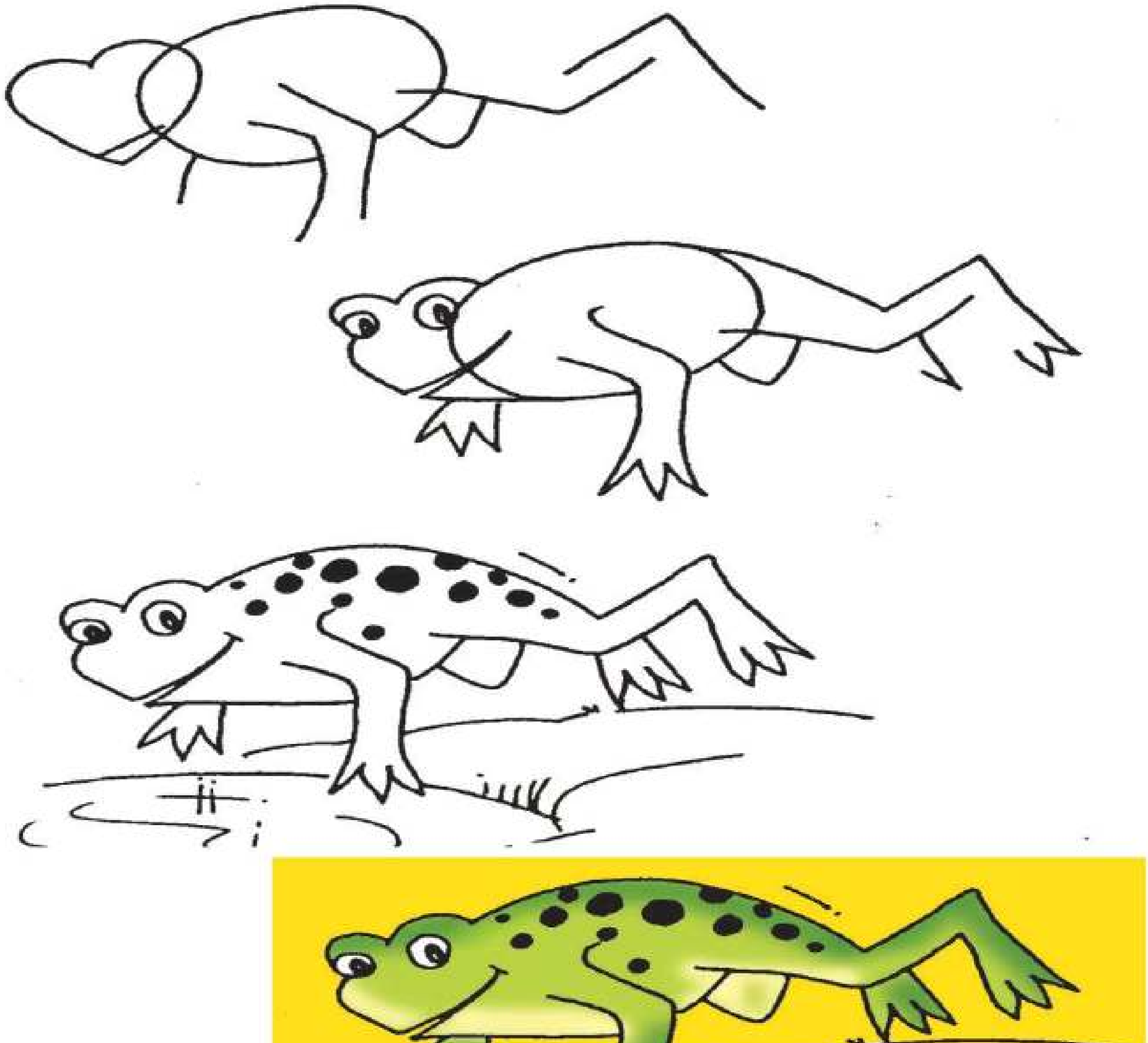

कविता

प्यारे मिट्ठू

– डॉ. नंदिनी शर्मा 'नित्या'

मिट्ठू, मिट्ठू, प्यारे मिट्ठू,
अब क्यों नहीं दिखते मिट्ठू ?
बचपन में तो रोज सवेरे,
आते थे तुम छत पर मेरे।
आँगन के उन जामुन को भी,
खाते थे तुम झूम-झूम के।
चूँ-चूँ, चीं-चीं करके तुम तो,
भर देते थे मन को सुख से।
मीठी लगती बातें तुम्हारी,
लगती थी वह प्यारी-प्यारी।
अब क्या भूल हुई है हमसे,
जो तुम रूठ गए हो हमसे ?
लौट आओ फिर आँगन मेरे,
राह तक रहे नैन ये मेरे।

– देवास (म. प्र.)

ध्रुव

– अश्वनी कुमार पाठक

था राजा उत्तानपाद के– बेटे का 'ध्रुव' नाम।
माँ 'सुनीति' थी, वे सुनीति से– करती थीं हर काम।
पाँच वर्ष का पुत्र एक दिन,
सहज भाव से आकर।
पितृ–गोद में बैठ गया था,
मन ही मन हर्षा कर।
सुरुचि विमाता ने जब देखा, ईर्ष्या मन में आयी।
ऐसी हरकत नहीं सुरुचि को, रत्ती भर भी भायी।
बाँह पकड़कर, पितृ–गोद से–
ध्रुव को त्वरित उतारा।
उसको लगने लगा कि मानों–
वह विपत्ति का मारा।

बोली सुरुचि– ''वत्स तुम मेरे– पुत्र रूप में आओ।
पितृ–गोद औ' सिंहासन के, अधिकारी बन जाओ।''

ध्रुव ने फौरत मधुवन जाकर,
तप का पथ अपनाया।
ईश्वर ने होकर प्रसन्न,
दर्शन दे धन्य बनाया।

सुरुचि विमाता औ' नारद से, पा प्रोत्साहन भारी।
मिला उन्हें ध्रुव–लोक, बने वे फिर उसके अधिकारी।

– जबलपुर (म. प्र.)

डाक पंजीयन : एम.पी./आय.डी.सी./६२३/२०२४-२०२६ | आर.एन.आय. पं. क्रं. ३८५७७/८५
प्रकाशन तिथि २०/०६/२०२६ | प्रेषण तिथि ३०/०६/२०२६ | प्रेषण स्थल- आर.एम.एस., इन्दौर

देवपुत्र का सदस्यता शुल्क है।

एक अंक ३०/-   वार्षिक सदस्यता ३००/-   १० वर्षीय सदस्यता ५०००/-

एक ही पते पर १० या अधिक अंक एक साथ मँगवाने पर वार्षिक शुल्क १८०/- प्रति अंक

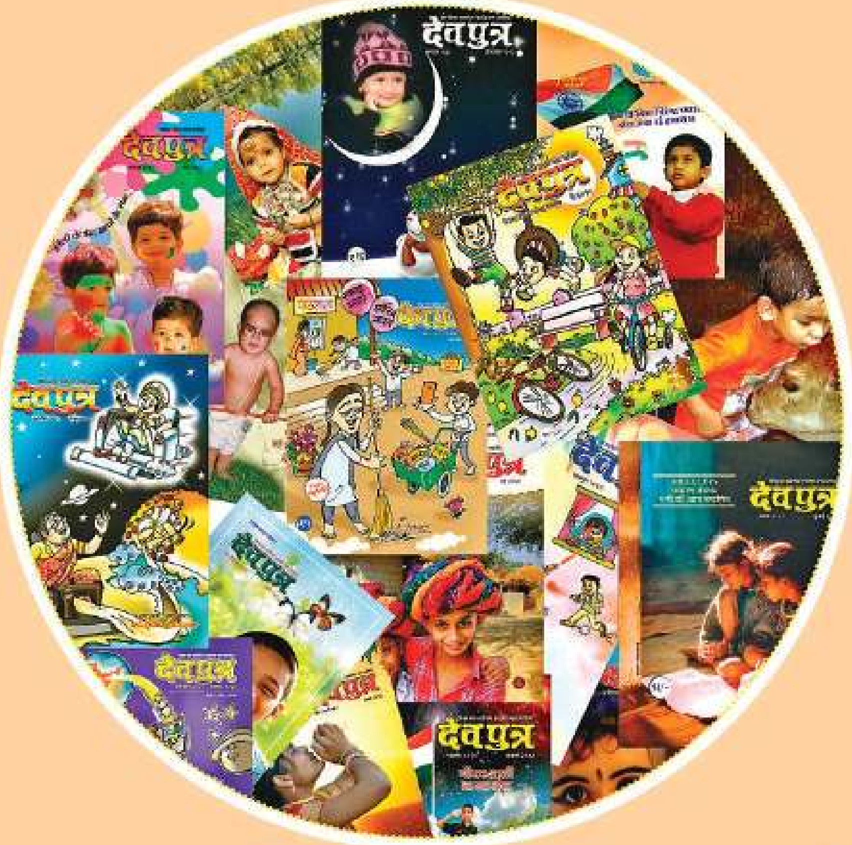

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल

'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

बाल साहित्य और संस्कारों का अग्रदूत

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र सचित्र प्रेरक बहुरंगी बाल मासिक

स्वयं पढ़िए औरों को पढ़ाइए

उत्तम कागज पर श्रेष्ठ मुद्रण एवं आकर्षक साज-सज्जा के साथ

अवश्य देखें- वेबसाईट : www.devputra.com

स्वामी सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर, म. प्र. के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक राकेश भावसार द्वारा अजीत प्रिन्टर्स एंड पब्लिशर्स, २०-२१, प्रेस कॉम्प्लेक्स, ए. बी. रोड, इन्दौर, म. प्र. से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, नवलखा, इन्दौर, म. प्र. से प्रकाशित   सम्पादक - गोपाल माहेश्वरी